ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

Mushrooming of B.Ed. Colleges Is a Challenge For a Quality Teacher Education

Virendra Singh Chaudhary

Abstract

Every concerned person talks about quality education. There have been reforms for total quality education. Programs, plans and policies have been devised to achieve the quality. The quality parameters like infrastructural facilities, competent teacher, quality student, conducive environment for curricular transaction need to be considered as pre-requisites of any reform for quality improvement.

In the recent decades, teaching learning has been undergoing drastic changes. There has been a shift towards student centred classrooms with teacher's role more as facilitator of learning rather than an autocratic master. Today new experiments are being tried out in the classroom that includes project based learning, development of thinking skills, and discovery learning approaches.

Many teachers are not properly trained in implementing the concepts behind the new curriculum and many are not equipped to properly implement the curriculum. The teacher education centres and the curriculum followed in the teacher education have very little focus on new trends in education.

Teacher education seems to be the most adversely affected area with regard to quality improvement. Mushrooming of B.Ed. colleges without satisfying the NCTE norms have further deteriorated the quality.

The National Council for Teacher Education Act passed in Parliament in1993. The Council was supposed to assist teachers and their training institutions in upgrading quality and professionalism in the critical area of teacher preparation to enable a strong and dynamic system of school education.

The NCTE succeeded in regulating these courses during the first couple of years of its

Research Student Deptt- of Educatian University of Rajasthan ,Jaipur

existence. And then, quietly, everything changed and the great mushrooming of teacher education institutions from around a mere 2,500 to over 14,000 in the next seven years came as a shocking surprise to many.

There are about 800 teacher education institutions in Rajasthan only two (0.25%) are in the government sector and not more 2% are aided private institutions. The rest, which is more than ninety five percent, are in the private and self financing sectors. These institutions exist as business centres for making profit. And the profit comes out of low overhead cost achieved out of low salary expenses of teacher educators.

However, at present, the salary and working conditions of the teacher educators is not lucrative enough to attract best talents into the field and also results in lack of their dedication. Without dedicated efforts of the faculty members no institution can excel.

How could one expect to achieve the purpose of education by a teacher who during training passes through these phases: admission on payment of huge unofficial fees in a college approved through illegal and corrupt means; absentee teachers and no focus on regular teaching; completion of projects through permitted fraudulent means, full permission to copy in examinations and; marks enhanced through additional monetary inputs.

The loss is being inflicted upon the young generation by providing them with teachers who got practically nothing by way of education and training in their teacher preparation institutions.

Education will have little meaning if it fails, in the words of Dr. Radhakrishnan, “to train us to apprehend the eternal values, to appreciate the supreme human virtues and the simple decencies of life. We must be educated not for cruelty and power but for love and kindness.”

Elaborating on the purpose of education, the outstanding philosopher-educationist-statesman stated further: “We must develop the freshness of feeling for nature, the sensitiveness of soul to human need. We must foster the freedom of mind, the humanity of the heart, the integrity of the individual. Even from nurseries, we must train human beings by unconscious influences and conscious effort to love truth, beauty and goodness.”

These, if understood, are the perfect formulation for the total curriculum of teacher preparation in India

Bibliography

1. Dror Yehuda 1995. The reality of ISO 9000. Quality Digest, Sept. pp. 82-83
2. Aarti Bansal Aggarwal, Rita (1994) The Magnificent Seven. The Hitawada, Dece. 28
3. Mukhopadhyay Marmar (2000) Management Quality in Education , NIEPA, New Delhi.
4. Teacher Education. Princal Theory and Practice, Jaipur ,2005
5. M. S. Singh, Quality Impact in Teacher Education, Delhi.Adhyayan 2004.
6. S, Venkataiah (Ed.) Teacher Education, Delhi.Anmol. 2001
7. Kavita Jain World Teachers Training Today , Delhi. Mohit 2003.
8. B. Thomas Teaching Skills and Classroom Management, Jaipur Pointer,2005.

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव

डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव[1] सुशीला सिंह[2]

बालक बचपन में सबसे अधिक अपने माता–पिता के साम्पर्क में रहता है। माता–पिता ही बालक के भावी व्यक्तित्व के निर्माता होते है। बाल्यकाल का हर क्षण उनके सानिध्य मे व्यतीत होता है। माता–पिता का व्यक्तित्व, उनका सामाजिक व्यवहार बातचीत का तरीका, पारस्परिक आचरण, रूचि सभी बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते है और यही बालक के आदर्श भी होते हैं। माता का सहयोग बालक के लिये एक दीपक का कार्य करता है जिसकी लौ से बालक का भवि य प्रज्वलित होता है। जिन संस्कारों का उद्भव हम बालक में चाहते है वह माता–पिता द्वारा ही प्राप्त होते है।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। बाल्यकाल से ही माता–पिता बालक के कैरियर के प्रति चिन्तित होने लगते हैं। ऐसे में पारिवारिक वातावरण का भी बालक के शैक्षिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। परिवार अपने आप में एक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र है जिसमें बालक समाज में निर्दिष्ट मूल्यों, आचरणों एवं व्यवहारों का अवलोकन करता है तथा माता–पिता और विद्यालय उसका घर होता है जो जीवन पर्यन्त बालक का प्रदर्शन करते हुए उसे प्रगति की ओर ले जाता है। परिवार में शिक्षा एवं प्रशिक्षण के साथ–साथ अनुदेश की प्रक्रिया भी चलती है। अतः परिवार के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक वातावरण का बालक के मन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। माता–पिता में मधुर सम्बन्ध न होने पर बालक में अच्छे गुणों का विकास नहीं होता है । इस तरह का सम्बन्ध बालक के मानसिक विकास की अधिक प्रभावित करता हे। जिसके कारण वह अपने अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं कर पाता है और शैक्षिक रूप में वह पिछड़ जाता है। अतः पारिवारिक सम्बन्ध, मूलभूत सुविधाऐं व पारिवारिक प्रोत्साहन आदि कारण बालकों की अध्ययनशीलता को कई प्रकार से प्रभावित करते है।

अभिवावक जिस छवि को बालक के अन्तःकरण में स्थापित करते है बालक भवि य में वही बनने की कोशिक करता है। इस कार्य में शिक्षक व्यवहार बालक की रूचि, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। यदि ये सभी कारक सकारात्मक हों तो बालक की शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो सकती है। जब बालक अध्ययन करते है तो उन्हें अभिप्रेरणा, प्रोत्साहन व पुनर्बलन मिलना चाहिए क्योंकि इसका शैक्षिक गतिविधियों की प्रकृति एवं व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।

गृह वातावरण बालक के प्रारम्भिक शिक्षा का आधार बनता है जिसमें बालक अपने अभिभावक एवं परिवार के अनय सदस्यों में अपना व्यवहार निर्धारित करता है पारिवारिक वातावरण स्वस्थ होने पर बालक का सर्वागीण विकास उचित ढंग से होता है। देखा जाता है कि अधिकांश परिवारो का वातावरण स्वस्थ नही रहता। माता–पिता छोटी–सी बात को लेकर झगड़ते रहते है। परिवार के लोगो का रहन–सहन उनकी आदते, अभिवृत्तियाँ, आकांक्षाएँ आदि बालक के शैक्षिक विकास को काफी हद तक प्रभावित करते है। यदि ये सभी कारक सकारात्मक हों तो बालक के व्यवहार को सकारात्मक बनाया जा सकता है। सकारात्मक सोच बालक के शैक्षिक विकास को काफी प्रभावित करती है।

परिवार बालक का अनौपचारिक विद्यालय है जिसमें बालक अपनी शिक्षा का आधार तैयार करता है। इसके लिये अभिभावक ही बालक की अन्तर्निहित योग्यताओं को पहचानकर उसे प्रोत्साहित करते हैं। बालक केवल सीमित समय के लिये विद्यालय से जुड़ा रहता है। उसका अधिकांश समय अपने पारिवारिक वातावरण में व्यतीत होता है। ऐसी स्थिति में न केवल बालक की शिक्षा अपितु उसके अन्य क्षेत्रों का विकास भी प्रभावित होना स्वभाविक है।

डॉ. वेणी प्रसाद के अनुसार :– ''परिवार व्यक्ति से भी अधिक प्राचीन है। व्यक्ति का जन्म परिवार में होता है उसका पालन पोषण भी परिवार में होता है यही उसे सामाजिकता का पाठ भी पढ़ाता है। यह

अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर प्राचार्य, महाराजा सूरजमल टी.टी. कॉलेज, भरतपुर

समाज की सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक इकाई है। यह मानव जाति की आदिम संस्था है।''

वील्स तथा स्टोर का कहना है :– जिस परिवार में स्नेह सहयोग तथा प्रजातंत्र की भावना पायी जाती है। उस परिवार के बालक की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है तथा बालक बड़ी सरलता से वातावरण में समायोजन स्थापित कर लेते है। इसके विपरीत स्थिति में बालक बाहृय वातावरण से समायोजन स्थापित करने में असमर्थता प्रकट करते है एवं कठिनाई का अनुभव करते है।

मनुष्य व्यक्तिगत विशेषताएँ :– पारिवारिक अनुभवों से ही प्राप्त करता है। किसी भी व्यक्ति में विशिष्ट गुणों का विकास उसके पारिवारिक पर्यावरण के अनुभवों पर ही निर्भर करता है। बालक के जीवन के प्रारम्भिक पारिवारिक अनुभवों का प्रभाव उसके सम्पूर्ण जीवन के विभिन्न पक्षों पर विशेष रूप से पड़ता है। इस सम्बन्ध में रेनवाहर महोदय का कहना है कि – बालक के पर्यावरण में रहने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति विशेष के प्रारम्भ में माता–पिता बाद में परिवार के अन्य सदस्यों तथा बालक के मध्य होने वाले परस्पर कृपाओ से व्यक्तित्व बनता है।

माता–पिता की अभिवृत्तियों का बालक की उपलब्धि पर प्रभाव आईमण्डस – (1936) ने माता–पिता द्वारा स्वीकृत तथा अस्वीकृत बालकों का अध्ययन किया और अपनी रिपोर्ट में यह बताया कि स्वीकृत बालकों का व्यवहार अस्वीकृत बालकों की अपेक्षा अधिक सामाजिक, मैजीपूर्ण, विश्वासपात्र, लोकप्रिय तथा प्रसन्नचित तथा उत्तम शैक्षिक उपलब्धि वाला होता है । ये प्रत्येक कार्य में रूचि रखने वाले तथा यथार्थता से सम्बन्ध रखते है तथा आत्म – प्रदर्शन की अभिवृत्ति का शोधन रचनात्मक तथा अन्य अनेक उपयोगी सामाजिक कार्यो द्वारा कर लेते है जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास पूर्णतः हो जाता है।

इसके विपरीत अस्वीकृत बालकों में असुरक्षा तथा आत्म हीनता की भावना पायी जाती हैं वे माता–पिता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अनेक प्रकार के व्यवहार करते है जैसे चुप रहना, तनिक सी बात पर रूठ जाना, क्रोधित होना, भोजन नहीं करना, बिस्तर पर ही मल–मूत्र त्याग देना आदि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बालक के बौद्धिक स्तर व्यक्तित्व विकास तथा उनकी योग्यताओं पर माता–पिता की अभिवृत्तियों का अवश्य ही प्रभाव पड़ता है। अभिवृत्तियों का प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। बालक विद्यालय में पढ़ता है। पढ़ने के उपरान्त उत्तीर्ण–अनुत्तीर्ण होने का माता–पिता पर भी प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव से बालक प्रत्यक्ष प्रभावित होता है। साथ ही साथ परिवार के आकार प्रकृति आदि का प्रभाव बालक की शिक्षा पर पड़ता है। पढ़ने की योग्यता पर भी बालक परिवार में स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

उच्च शिक्षा प्राप्त माता–पिता की आकांक्षाएँ अपने बालकों के प्रति अत्यधिक उच्च होती है। अशिक्षित माता–पिता के बालकों की नि पत्ति अच्छी नहीं होती है। इसी प्रकार घर में यदि सांस्कृत वातावरण नहीं है तो विद्यालय में बालक की अभिव्यक्ति ठीक प्रकार की नही हो सकती है।

भारतीय संस्कृति की गतिशीलता ने परिवार के प्रतिमानो में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किए है। अब परिवार का आकार दिन–प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। व्यावसायिक गतिशीलता अब अधिक होने के कारण परिवार की संरचना बदल रही है। बालकों की शिक्षा की ओर माता–पिता ध्यान अवश्क देते है। परन्तु उनमें निराशा इस बात की अधिकता रहती है। कि क्या पढ़ने लिखने के बाद बच्चों को कोई कार्य मिल सकेगा।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। बाल्यकाल से ही माता–पिता बालक के कैरियर के प्रति चिन्तित होने लगते है। ऐसे में पारिवारिक वातावरण का भी बालक के शैक्षिक विकास पर प्रभाव पड़ता है।

निम्न प्रकार का पारिवारिक वातावरण बालक को शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है।

1. निम्न बच्चों को माता–पिता का अत्यधिक लाड़–प्यार मिलता है वे बच्चे अपना शैक्षिक विकास ठीक प्रकार से नही हो पाता है। वे बच्चे अपनी हर जरूरत के लिए माता–पिता होते है।
2. इसी प्रकार अत्यधिक छूट मिलने पर भी बच्चे अपने मार्ग से भटक जाते है वे शिक्षा के प्रति लापरवाह हो जाते है।
3. कभी–कभी माता–पिता बच्चों से अधिक अपेक्षाएँ रखने लगते है जिससे बच्चे मानसिक दबाब महशूश करते है और उनका शैक्षिक विकास अवरूद्ध हो जाता है।
4. परिवार में कलह का वातावरण होने से भी बच्चे का शैक्षिक विकास प्रभावित होता है।
5. बच्चों पर अत्यधिक पाबन्दियाँ रखने रोक–टोक करने पर भी बच्चों का मानसिक विकास प्रभावित होता है।
6. विद्यार्थियों की उत्तम शैक्षिक उपलब्धि के लिए आवश्यक है कि उन्हें सन्तुलित वातावरण मिले। माता–पिता बच्चों की क्षमताओं को समझे उन्हें अपना विकास करने का पूर्ण अवसर दें तथा उनपर किसी भी प्रकार मानसिक दबाब न डाले अत्यधिक अपेक्षाएँ न करें।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि परिवार का वातावरण परिवार के व्यक्तियों का विद्यार्थी के प्रति व्यवहार उसके शैक्षिक विकास को प्रभावित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, प्रोफेसर एस.पी. एवं गुप्ता डॉ. अल्का – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
2. सिंह, डॉ. अरूण कुमार – शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी
3. लाल, आर एवं जैन – शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ
4. माथुर, डॉ.एस.एस. – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
5. ऑबेरॉय डॉ.एस.सी – शिक्षा मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपो, करोलबाग नई दिल्ली
6. बत्रा दीनानाथ – शिक्षा का भारतीयकरण

*****

कबीरदास जी के नैतिक मूल्यो की वर्तमान शिक्षा समाज में प्रासंगिकता

सुमन वर्मा

शोध सारांश

वर्तमान युग के सामाजिक प्रश्नो समस्याओ, संघर्षो, द्वन्दो, विघटनो को देखते हुए अशान्ति, दुःख,पीडा कष्ट के निरूपण के लिए सन्त साहित्य आज भी हमे इन समस्याओ से उभरने की शक्ति दे सकता है। आधुनिक संदर्भ के सन्त साहित्य का गहन अवलोकन एवं अंगीकरण करने की आवश्यकता है, आज के सामाजिक अन्तर्विरोधो एवं सन्तकालीन अन्तर्विरोधो की तुलना द्वारा वर्तमान के युग में सन्त काव्य की उपादेयता परखकर वर्तमान की शैक्षिक समस्याओ पर उपाय खोजने का समय है आज सामाजिक तथ्यो से जो सामना करना पड़ रहा है इन प्रश्नो के हल के लिए सन्त कबीर दास जी के सामाजिक दर्शन को नये सिरे से विचारणीय बनाया जाए केवल भारतीय ही नही अपितु विश्व वेदना को दूर करने के लिए,जगत के कल्याण के लिए कबीरदास जी के साहित्य से प्रेरणा लेकर जगत का मंगलदायक पोषण किया जा सकता है।

कबीर दास जी के अनुसार–

वर्तमान भौक्षिक व्यवस्थाओं में उन सभी परियोजनाओं को समावेशित किया जाए जिनसे विद्यार्थी के मानसिक बौद्धिक विकास में सहयोंग मिले विद्यार्थी के कौशल को पर्याप्त अवसर दिया जाए विद्यार्थी की रूचि, स्तर ही सम्पूर्णता प्राप्त नही करें बल्कि रूचि में सहानुभूति, भाान्ति, विश्वास, प्रेम, ईमानदारी, ईश्वर के प्रति अनन्य सफल विश्वास भाव बनायें। पुरूशोत्तम गुणी मानव बनायें और स्त्री को सर्वगुण सम्पन्न स्त्री के रूप में प्रकट करें। उचित वातावरण के रूप में प्राकृतिक स्थितियां निर्मित हो।

आज आधुनिकता की चका चौंध शिश्य अपने माता–पिता समान शिक्षक से दूर हो इन्टरनेट की मायावी और आभासी दुनिया के अधिक नजदीक हो गये हैं। जहां वे गलत आदतों का शिकार होकर अपने संस्कारों को भूल कर अपराधों को भी बढावा दे रहे है वहां वे अपने नैतिक मूल्यों को भी भूलते जा रहे है। अगर दोनो की भूमिका में एवं आज की विद्यालय व्यवस्थाओं में आ रहे बदलावों के कारणों की जांच की जायें तो यह बात सामने आती है कि आज के शिक्षक के द्वारा भी वांछनीय दायित्वों, कर्तव्यों की पूर्ति नहीं हो पा रहीं है यही कारण है कि स्थिति तनावपूर्ण हो रही है। अतः इस तनाव ग्रस्त माहौल में कबीर जैसे भौक्षिक सुधारक के विचारों की महत्ती आवश्यकता है। सन्त कबीर दास जी कहते है–

ज्यू् नैन मे पूतली, त्यूँ खालिक घर मांहि

मूरखि लोग न जाण ही, बाहरि ढूढण जांहि।

अर्थात् वेयैक्तिक, जीवन का सर्वश्रेश्ठ आदर्श है – भौतिकता का विसर्जन कर ब्रहम की आराधना की जाए प्रत्येक प्राण में वहीं सांई विद्यमान है।

21 वी सदी अदभुत काल है परन्तु इस वैज्ञानिक युग मे जीने वाला, आज का मानव शान्ति को बाहर खोजता दिखाई देता है और आम आदमी मन्दिरो ,मठो प्रवचनो बाबाओ,के चरणो में अपने सुख की खोज करता है।सन्त कबीर ने समाज को सही मार्गदर्शन दिया है मनुष्य जीवन में आने वाले

शोधार्थी शिक्षा विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय sumanvermajv@gmail.com

आचरण,नियम जैसे अतिथि सत्कार सदाचरण,परहित चिन्ता आदर मर्यादा, प्राणीमात्र के प्रति करूणा दया, क्षमा, संयम ,निष्काम कर्म आदि जीवन क्रियाओ की शुद्धता पर ही नहीं उन्होने अपनी वाणी से समाज की आन्तरिक अशुद्धता को साफ करने की प्रक्रिया हेतु ही समाज को सच्चा रास्ता दिखलाया है उन्होने मुस्लिमो को उनके अन्धे धर्म से निकालकर सच्चे धर्म की और ले जाने हेतु जातिवादी पाखण्ड का विरोध किया।:–

कांकर पाथर जोरिके, मस्जिद लई चुनाथ

ताहि–चढि कर बांग–दे, बहिरा हुआ खुदाय

कबीर ने स्त्री पुरूष सम्बन्धो के लिए भी उचित मार्गदर्शन दिया है कि संसार में काम अनावश्यक नही परन्तु उसे विकृत न बनाये–

नारी पराई भूगते नरकहि जाई

आगि–आगि सब एक है,देत हाथ जरि जाई

कबीर दास जी ने शिक्षा व्यवस्था पर भी गहन दृष्टिकोण दिया है गुरू शिष्य सम्बन्धो में भी आज की अपवित्रता को उन्होने इस प्रकार इंगित किया –

गुरू लोभी शिष लालची,दोनो खेले दाव

दोनो बूडो बापुरे,यदि पाथ की नाव

अर्थात दोनो की ही दुर्गति निश्चित है सच्चे गरूओ को भी उन्होने सम्मान भाव से दृष्टिगत किया है ओर ईश्वरीय अवतार के रूप में सत्य का मार्ग बतलाने वाला मानव बताया है–

- गुरू गुरू में भेद है गुरू गुरू में भाव

  सोई गुरू नित बन्दिये,शब्द बता वे दाव।

- सतगुरू की महिमा अनन्त, अनन्त किया किया उपगार

  लोचन अनन्त उधारिया अनन्त किया उपगार

- पुरा सतगुरू न मिला,सूनी अधुरी सीख

  स्वांग यति का पहिनि के ,घर घर मागें भीख

शिष्य के लिए उन्होने भौतिकता की और न भागने का निर्देश देकर एकाग्रता पर जोर डालकर अध्ययन की अैर संकेत किया है।:–

पोथी पढि पढि जग मूवा पण्डित भयान कोय

एकै आखर पीव का , पढै सो पण्डित होय।

कबीर ने समाज में स्थित मान्यताओ, विक्रतियों, रूढियो ,विडम्बनाओ, मूल्य हीनताओ को अन्यन्त शक्तिशाली कडवे, उग्र विद्रोही स्वर से इनका विरोध किया ,स्व अनुभव की तीव्र धार से उन्होने समाज को स्वतन्त्रता,समता,बंधुता का अमर संदेश दिया हैः–

कबीरा खडा बाजार में ,सबकी मॉगे खैर

ना का हू से दोस्ती ना काहु से बैर।

विज्ञान के एक तत्व का प्रणयन अन्यन्त सीधीभाषा द्वारा वे करते है– शरीर जो है वह पंच तत्व–पृथ्वी, जल, आकाश, आग एवं पवन से बना हुआ है तो ज्ञान बडा या जीव :–

पंच तत्व का पूतरा जुक्ति रची मै कीव

मै तौही पूछौ पण्डिता,शब्द बड़ा की जीव

कबीर की वाणी ने सामाजिक मूल्यहीनता के तत्वो का खण्डन किया है तथा भेद विरहित समाज की सदा अभिलाषा की है। उनके काव्य का यही लक्ष्य था कि सामाजिक मूल्यो को किसी प्रकार की हानि नही पहूॅचे उन्होने निष्काम कर्म एवं परोपकार का यश गाया है–

धन रहै न, जौबन रहे, रहै न गाव न ठॉव

कबीर जग में जस रहै, कर दै किसी का काम।

आज के समाज में लूटपाट एवं ठगी, भ्रष्टता आदि बुराईया चरम पर है जो समाज देश की प्रगति में बाधक है कबीर का खण्डन कोरी भावुकता पर आश्रित नही होकर बुद्धि के ठोस धरातल पर आधारित ह–

:– पाहणा केरा पूतला,करि सूजै करतार

:– पाहनि बोई पृथ्वी,पण्डित पाडी बात

भ्रमजाल में फॅसे समाज को बाह थामकर ऊॅचा उठाने के लिए उनकी आत्मा तडप उठी उनकी चिन्ताग्रस्त आत्मा ने पुकार लगाई–

या जग अॅधा मै केहि समुझावौ

इक दूई होय उन्हे समुझावे

सबहि भूलाना पेट के धंधा

कबीर की वाणी वि" व की संरक्षिका एवं पथ प्रद" िका दोनो उद्दे" यों को लेकर चलती है उसका कारण यह है कि कबीर की संवेदना वायवीयताः अतर्क्यता, पाखण्ड या ढोंग को आश्रय नही देती।

मुल्ला का बांग और भोख के हज में कबीरदास जी ने जब अनेक आडम्बर देखे तो उन्हे तर्क देते हुए अपनी विचार" ैली को कहा कि –

ना जाने तेरा साहब कैसा है।
मुल्ला होकर बांग देवे, क्या तेरा साहब हरा है
कीड़ी के पांव में नेवर बाजे, वह भी साहब सुनता है।

कबीर मनुष्य को अच्छे फल के लिए अच्छे कार्य करने चाहिए बुरा कर्म बूरे फल तो देगा ही साथ हिंसा को भी जन्म देता है–

साधो,पाण्डे निपुन कसाई

बकरा मारि भेड को धाई,दिल में दरद न आई

करि अस्नान तिलक दे बैठे, विधि सौ देव पुजाई

कबीर शुद्धाचरण का उपदेश ही नही देते प्रत्युत स्वंय भी अपने आचरण में कर्म एवं वाणी की सबलता लेकर जिये। उनकी वाणी में एवं कर्म मे अन्तर नही था इसलिए वे दृढ भाव से कह पाये–

सा चादर सुर नर मुनि ओढिन, आढि के मेली कीनी चदरिया

दास कबीर जतन से आढिन ,ज्यो की त्यो धर दीनी चदरिया

कबीर ने षडविचारो के शमन को अधिक महत्व दिया हइन्होने लोक भावना को सबल बनाने के लिए कहा हैः–

कामी क्रोधी लालची ,इनसे भक्तिन होय

भक्ति करे कोई सूरमा,जाति बरन कुल खोय

कबीर ने भारतीय शैक्षिक समाज एवं संस्कृति को व्यापक मूल्य दृष्टि प्रदान की है उन्होने लोगो को योग्य दिशा दिखाई उनके दोषो को प्रकट किया :–

अपराधी तीरथ चले,तीरथ कहा तारै

काम क्रोध मन भरीर हे कहा देह पखारे

युवाओ का चारित्रिक पतन समाज से होता हुआ देश का पतन है अतः कबीर ने मनुष्य के हृदय में दया ,प्रेम,करूणा आदि गुणो के प्रसार का महत्व प्रतिपादित किया अतः कबीर ऐसे लोगो से कहते है–

दया भाव हिरदै नी ,ज्ञान कथै बेहद

तै नर नरक हि जाहिंगे,सुन सुन सा खीशद

सज्जनो के आचरण से समाज में शान्ति पनपती है समाज में जितने सज्जन होंगे उतना ही समाज संस्कार शील होगा। उन सज्जनो के अहं, सशंय स्वार्थ ही आपदाओ को एवं शोक को जन्म देता है, दुर्गणो रूपी रोगो को दूर रखने की मन्त्रणा कबीर देते है–

जहाँ अहँ तहाँ आपदा, जहाँ संशंय तहाँ शोक,

कहे कबीर कैसे मिटे,चारो दीरघ रोग।

उच्च पदस्त लोगो के कारनामों से व्यक्ति की अनावृतता एक एक करके सामने आती है अतः व्यक्ति का समाज से विश्वास उठने लगा है। एसे में समाज विनाश के कगार पर आ खडा हुआ है,एसे मे समाज को कबीर की वाणी का स्मरण कर अनुकरण करना अत्यावश्यक हैं।

कबीर ने नारी के कुलक्षणो की भर्त्सना की परन्तु उन्हें ही महान पुरूषो की खान भी कहते है–

नारी नीच न जानिए,सब सन्तन की खान

जामै हरिजन उपजै सोइ रतन की खान।

पारिवारिक मनोविज्ञान की दृष्टि से कबीर ने नारी का विरोध नही किया है अपितु व्यभिचारिणी स्त्री का विरोध किया है

कबीर का साहित्य मानवीय मूल्यो से ओत प्रोत है जो समाज को कल्याण के मार्ग पर ले चलने की क्षमता रखता है

इसलिऐ कबीर का युगीन संदर्भ से मूल्यवान जब आज के सदंर्भ से समस्याओ की भरमार है तब उन्होने अनेक उपाय बताये है,उन्होने सार शब्द को ही ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया है एवं सार शब्दो के प्रसार की बात कही है वे कहते है–

सब्द सब्द बहु अन्तरे,सार सब्द मथिलीजै

कहै कबीर जहाँ सार ,सब्द नहि दृगजीवन सौ दीजै।

प्रचलित शिक्षा व्यवस्था में जीवन अर्थवत्ता को महत्व देते हुए कबीर शब्द सुधार का मन्त्र देते है, यदि ग्रन्थो को पढकर भी उस ज्ञान को आत्मसात नही कर सकते तो एसी पुस्तको को बहा दो। एसी तीव्र प्रतिक्रिया मे–

कबीरा पढाना दूर करू, पौथी देउ बहाय

बावन अक्षर सोधी के ,राम नाम लौ आय

कबीरदास जी के अनुसार गुरू को शिश्य के भौक्षिक तत्वों का निर्माण एक विशुद्ध सामाजिक पर्यावरण एवं भाान्त वातावरण के रूप में किया जाना चाहिऐं और पाठ्यक्रम शिक्षण विशय – समाज, राष्ट्र, विश्व ही नहीं ईश्वरीय सत्ता, ब्रहमाण्ड विचारों के रूप में होने चाहिए। पवित्र साधनों के अभाव और सन्तुलित रूप से बढते सूचनाओं के भण्डार से व्यक्ति स्वयं को आन्तरिक रूप से असुरक्षित महसूस करता है। दिशाहीन शिक्षण प्रणाली किसी भी व्यक्ति में मानवीय गुण एवं मूल्यों का विकास करने की अपेक्षा उसे केवल सत् ही ज्ञान प्रदान कर पा रही है। मनुष्य के आचारगत पतन और भटकनो को देखते हुए कबीर ने सर्वथा प्रथक एवं मर्यादित ,संयमित सात्विक चिन्तन पद्धति का विकास किया और समुचे समाज को नैतिक बल की आधार स्थली पर ला खडा किया।

अतः इन सभी परिस्थितियों के कारण कबीर द्वारा बतायें गयें मूल्यों को निम्न प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है–

1. योग शिक्षा
2. आध्यात्मिक विकास हेतु संगोष्ठी
3. सरल, सुबोध, सुदृढ सम्प्रेशित कार्यक्रम
4. भौक्षिक नवाचारों का पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर
5. धर्म निरपेक्ष शिक्षा
6. नैतिक शिक्षा आधारित कार्य” शाला।
7. प्रार्थना सभा कार्यक्रम

सन्दर्भ सूची

1. डा. सोनेने – कबीर ओर तुकाराम का सामाजिक जीवन – विकास प्रकाशन कानपुर।
2. लालचन्द दूहन– कबीरवाणी–मनोज पब्लिशन्स दिल्ली।
3. डॉ. सरनाम सिंह –कबीर कृतित्व–कल्पना प्रकाश दिल्ली।
4. रघूवंश– कबीर एक नई दृष्ठि–लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद।
5. कबीर दर्शन – डॉ. रामजीलाल सहायक, प्रकाशन इलाहाबाद।

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

''सेवापूर्व पाठयक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में रंगमंच शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन''

दीपक कुमार यादव

शोध सारांश

रंगमंच के द्वारा शिक्षा से हम समानता, स्वतंत्रता, न्याय, निष्पक्षता, सर्वधर्मसम्भाव, सहयोग आदि मूल्यों को बच्चों तक आसानी से पहुँचा सकते है और इसके सकारात्मक परिणाम दिखायी देंगे। इस शोध का उद्देश्य क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान, अजमेर में अध्ययनरत विद्यार्थियों में रंगमंच कार्यशाला प्रशिक्षण पूर्व तथा पश्चात दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। शोध न्यादर्श में 12 दिवसीय कार्यशाला में भाग लेने वाले 33 विद्यार्थियों को लिया गया है। परिणाम के रूप में पाया गया कि रंगमंच और कक्षाकक्ष, रंगमंच और शिक्षण दक्षता, रंगमंच और सामाजिक मूल्य, रंगमंच शिक्षण के प्रति जागरूकता तथा रंगमंच की जानकारी में कार्यशाला प्रशिक्षण पूर्व दृष्टिकोण की अपेक्षा कार्यशाला प्रशिक्षण पश्चात का दृष्टिकोण अधिक प्रभावी रहा है। अतः कहा जा सकता है कि रंगमंच विधा का शिक्षण में प्रयोग प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

1.प्रस्तावना एंव पृष्ठभूमि :–

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में प्राचीन समय से ही रंगमंच के द्वारा शिक्षा दी जाती रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कला शिक्षा में रंगमंच को महत्वपूर्ण माना गया। विभिन्न सरकारी प्रतिवेदनों में रंगमंच के द्वारा शिक्षा की बात कही गयी।रंगमंच शिक्षा का आज की विद्यालयी शिक्षा में एक महत्वपूर्ण स्थान है, यह न केवल बच्चों को उस किताबी जिन्दगी से बाहर लाती है जो उन्हें प्रायः बोझिल और रसहीन लगती है बल्कि बच्चों के अन्दर छिपी सृजनात्मकता को बाहर लाने का सशक्त माध्यम भी है, NCF-2005 के मार्गदर्शक सिद्धान्त जीवन को अधिगम से जोड़ने की बात करते है जिनका कलाओं, विशेषकर रंगमंच से सीधा सम्बन्ध है। बच्चों के भाषिक विकास और मूल्य संवर्धन में रंगमंच शिक्षा को एक सशक्त माध्यम माना जा सकता है।

मूल्यों की स्थापना, संवर्धन और जीवन में उनका निष्ठा के साथ पालन, ये क्रमशः ऐसी अपेक्षाऐं है जिन पर किसी भी सभ्य समाज का शान्तिपूर्ण और दीर्घकालीन अस्तित्व निर्भर करता है। आज के सामाजिक परिदृश्य पर दृष्टि डाली जाए तो कहा जा सकता है कि मूल्यों के गिरते स्तर से समाज पर जो नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे है, उससे न केवल व्यक्ति का जीवन चिन्ताओं से घिरा है बल्कि समाज, राष्ट्र और विश्व समुदाय के समक्ष भी अनेक चुनौतियां सामने आयी है। आज हर स्तर पर समाजों व राष्ट्रों द्वारा मूल्यों के संवर्धन और लोकतांत्रिक संस्थाओं के स्वरूप को बनाए रखने और लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों के विकास की महती आवश्यकता सभी को प्रतीत हो रही है। इसके पीछे एक प्रमुख कारण यह दिखायी देता है कि लोकतंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है, जिसमें व्यक्तियों के जीवन व गरिमा की रक्षा और संवर्धन के साथ–साथ व्यक्ति व समाज, समाज व राष्ट्र तथा राष्ट्र व विश्व समुदाय के श्रेष्ठ सामंजस्य स्थापित हो सकता है।लोकतंत्र की स्थापना में हम शिक्षा को एक प्रमुख माध्यम मानते है और जब तक विद्यालयी शिक्षा में कुछ ऐसी विधाएँ अभ्यास और परम्पराएँ न जोड़ी जाएँ जिनसे न केवल शिक्षा के द्वारा लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना हो बल्कि मूल्य स्थापना की यह प्रक्रिया ऐसी हो जिसमें हर बालक या बालिका अपनी सक्रिय व स्वैच्छिक भूमिका निभा सके तब तक शिक्षा मात्र एक औपचारिकता ही बनी रहती है। शिक्षा में रंगमंच, या नाट्य शिक्षा को उचित स्थान दिये जाने के हमारे विचार के पीछे यह आधार है कि हमारी कलाएँ और परम्पराएँ मात्र कुछ गिने–चुने अवसरों पर यथा 15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर, 5 सितम्बर विद्यालय के वार्षिक–महोत्सव, प्रस्तुति पाने मात्र के लिए नहीं है, बल्कि उनको जीवन का अहम हिस्सा विशेषकर विद्यालयी शिक्षा का महत्वपूर्ण पक्ष

(Assistant Professor) Hindupat Institute of Teacher Training, Raghogarh, Guna (MP), deepakcharkhya11@gmail.com

बनाए जाने की अपेक्षा है।

यदि हम समानता, स्वतंत्रता, न्याय, निष्पक्षता, सर्वधर्मसम्भाव, सहयोग आदि मूल्यों को रंगमंच शिक्षा के माध्यम से बच्चों तक पहुंचाने का प्रयास करें तो इसके सकारात्मक और सृजनात्मक परिणाम हमें दिखायी देंगे। रंगमंच एक ओर व्यक्ति की उसके भीतर छिपे कलाकार को बाहर लाने का माध्यम है तो दूसरी ओर एक ऐसी जीवन जीने की कला है जिसमें व्यक्तित्व को दूसरों का महत्व समझ में आता है और वह धीरे–धीरे आत्मकेन्द्रित चेतना से परकेन्द्रित चेतना की ओर बढ़ने लगता है। 'परकेन्द्रित चेतना' की यही गति मूल्यों की स्थापना करती है और अन्ततः व्यक्ति स्व के अन्दर की शान्ति और स्व के बाहर की शान्ति दोनों का अनुभव करने लगता है।आज इस बात कि आवश्यकता है कि शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों और संस्थाओं का रंगमंच शिक्षा से परिचित करवाया जाए। ऐसे संसाधक व्यक्ति तैयार किए जाऐं जो शिक्षक समुदाय को ऐसे कौशल सिखा सके कि वे अपने विद्यालय में उपलब्ध साधनों और सुविधाओं के अनुसार बच्चों की रंगमंच की रोचक विद्या से परिचित करवा सके।

2. उद्देश्य(Objects)–अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार से है :–

- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों में रंगमंच शिक्षा के संदर्भ में दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों में रंगमंच विधाओं का कक्षा कक्ष में प्रयोग संबंधि दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों में रंगमंच और शिक्षण क्षमता के संदर्भ में दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों में रंगमंच शिक्षा के द्वारा सामाजिक मूल्य विकास के संदर्भ में दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों में रंगमंच शिक्षण के संदर्भ में जागरूकता का अध्ययन करना।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों की रंगमंच कार्यशाला से पूर्व विचारों का जानना।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों की रंगमंच कार्यशाला से पूर्व और कार्यशाला के पश्चात दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना

3.न्यादर्श (Sample)–प्रस्तुत शोध में उद्देश्यकृत न्यादर्श विधि द्वारा रंगमंच कार्यशाला में भाग लेने वाले क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,अजमेर में विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत 33 विद्यार्थियों को लिया गया।

4. उपकरण (Tool)– शोधकार्य में शोधकर्त्ता द्वारा रंगमंच प्रशिक्षण से पूर्व तथा रंगमंच प्रशिक्षण के पश्चात उनके दृष्टिकोण को जानने के लिए प्रश्नावली का निर्माण रंगमंच शिक्षा से जुड़े विशेषज्ञों के परामर्श से किया गया।

5. रंगमंच कायशाला कार्यक्रम(Theatre Workshop Programme):-क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर में 12 दिवसिय रंगमंच कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें कुल 469 विद्यार्थियों में से 33 विद्यार्थियों का चयन विशेषज्ञों के द्वारा किया गया था। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम निम्न बिन्दुओं पर आधारित था–

- विद्यालयों में उपलब्ध साधनों और सुविधाओं के अनुरूप रंगमंच शिक्षा को प्रभावी बनाए जाने के तरीके।
- शिक्षक–शिक्षकाओं, समुदाय और अभिभावकों को रंगमंच शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक बनाना।

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

- पाठ्य–पुस्तकों को आधार बनाकर रोचक, मूल्यपरक, लघु नाटकों का निर्माण करने और उन्हें बच्चों के द्वारा प्रस्तुत कर सकने की क्षमता का निर्माण।

6. आंकडों का विश्लेषण (Data Analysis)–

6.1 रंगमंच और कक्षा कक्ष (Theatre and Classroom)

	सहमत		आंशिक सहमत		असहमत	
Q.No.	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test
1	72.72	87.9	27.3	12.12	-	-
2	75.8	100	24.24	-	-	-
6	18.2	-	33.33	-	48.5	100
7	24.3	48.5	57.58	51.5	18.2	-
20	3.3	-	21.2	9.09	75.8	90.9
21	66.66	54.6	15.6	33.4	18.2	12.1

- सारणी संख्या 6.1 के प्रश्न संख्या 1 और 2 में रंगमंच का कक्षा कक्ष में प्रयोग के सम्बन्ध को दर्शाया गया है। पूर्व परीक्षण के प्रश्न संख्या 1 में 72.72% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण 87.9% छात्रों ने रंगमंच विधि का प्रयोग अपने शिक्षण कार्य में करने को सहमति दर्शायी।
- प्रश्न संख्या 6 में रंगमंच विधि का प्रयोग करने पर पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं किया जा सकता है के सम्बन्ध में पूर्व परीक्षण में 48.5% छात्रों ने असहमति दर्शायी वही पश्च परीक्षण में 100% छात्रों ने असहमति दर्शायी।
- प्रश्न संख्या 20 में रंगमंच का आयोजन कक्षा कक्ष में सम्भव नहीं है के सम्बन्ध में पूर्व परीक्षण में 75.8% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में 90.9% छात्रों ने अपनी असहमति दर्शायी।

6.2 रंगमंच और शिक्षण दक्षता (Theatre and Teaching Competancy)

	Agree (सहमत)		Partial Agree (आंशिक सहमत)		Disagree (असहमत)	
Q.No.	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test
3	60.6	21.3	39.4	57.6	-	21.3

4	3.03	33.33	27.3	33.33	69.7	33.4
10	84.9	100	9.09	-	6.06	-
13	90.9	100	9.1	-	-	-
14	45.5	78.8	39.4	21.2	15.1	-
16	15.1	-	36.4	45.5	48.5	54.5
17	24.2	-	51.5	54.5	24.2	45.5
22	18.2	21.3	15.1	45.5	66.6	33.3

- सारणी संख्या 6.2 के प्रश्न संख्या 3 में रंगमंच के बिना भी शिक्षक प्रभावी संप्रेषण कर सकता है के सम्बन्ध में पूर्व परीक्षण में 60.6% छात्रों ने अपनी सहमति बतायी तथा पश्च परीक्षण में 21.3% छात्रों ने अपनी सहमति बतायी जबकि पूर्व परीक्षण में 39.4% छात्र आंशिक रूप से सहमत थे तथा पश्च परीक्षण 57.6% छात्र आंशिक रूप से सहमत थे पूर्व परीक्षण में कोई भी छात्र असहमत नहीं था वहीं पश्च में 21.3% छात्रों ने असहमति बतायी।
- प्रश्न संख्या 10 में रंगमंच प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक का व्यवहार तथा गैर प्रशिक्षित शिक्षक के व्यवहार से अधिक प्रभावी होता है के संबंध में पूर्व परीक्षण में 84.9% छात्रों ने अपनी सहमति बतायी जबकि पश्च परीक्षण में 100% छात्रों ने अपनी सहमति दर्शायी।
- प्रश्न संख्या 13 में रंगमंच न केवल शिक्षण कार्य हेतु अपितु व्यक्तित्व विकास में अच्छे सम्प्रेषण का कार्य करता है के संबंध में पूर्व परीक्षण में 90.9% छात्रों ने अपनी सहमति बतायी जबकि पश्च परीक्षण में 100% छात्रों ने अपनी सहमति बतायी।
- प्रश्न संख्या 16 में रंगमंच विधि का प्रयोग शिक्षक नहीं करता क्योंकि उसमें अत्यधिक श्रम की आवश्यकता होती है, के सम्बन्ध में पूर्व परीक्षण में 15.1%छात्रों ने अपनी सहमति बतायी तथा पश्च परीक्षण में किसी भी छात्र ने अपनी सहमति नहीं बतायी जबकि पूर्व परीक्षण में 36.4% छात्रों ने अपनी आंशिक सहमति दर्शायी तथा पश्च परीक्षण में 45.5% छात्रों ने अपनी आंशिक सहमति बतायी तथा पूर्व परीक्षण में 48.5% छात्रों ने अपनी असहमति बतायी जबकि पश्च परीक्षण में 54.5% छात्रों ने अपनी असहमति बतायी।

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

6.3 रंगमंच और सामाजिक मूल्य (Theatre and Social Value)

	Agree (सहमत)		Partial Agree (आंशिक सहमत)		Disagree (असहमत)	
Q.No.	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test
19	6.06	-	33.3	9.1	60.6	90.9
28	9.1	9.1	45.5	69.7	45.5	21.3
29	78.8	90.9	15.1	9.1	6.06	-

- सारणी संख्या 6.3 में प्रश्न संख्या 19 में रंगमंच विधि के द्वारा केवल भाषा और सामाजिक विषयों का ही अध्ययन किया जा सकता है के संबंध में पूर्व परीक्षण में 6.06% छात्रों ने अपनी सहमती बतायी तथा पश्च परीक्षण में किसी भी छात्र ने अपनी सहमती नहीं बतायी तथा पूर्व परीक्षण में 33.3% छात्रों ने अपनी आंशिक सहमती बतायी तथा पश्च परीक्षण में 9.1% छात्रों ने अपनी असहमति बतायी औरपूर्व परीक्षण में 66.6% छात्रों ने अपनी असहमती बतायी वहीं पश्च परीक्षण में 90.9%छात्रों ने अपनी असहमति बतायी।
- सारणी संख्या 6.3 के प्रश्न संख्या 28 में सामाजिक मूल्यों की शिक्षा केवल रंगमंच द्वारा ही दी जा सकती है, के सम्बन्ध में पूर्व परीक्षण में 9.1% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में भी 9.1% छात्रों ने अपनी सहमति दर्शायी। जबकि पूर्व परीक्षण में 45.5% छात्रों तथा पश्च परीक्षण में 69.7% छात्रों ने इस कथन के सम्बन्ध में आंशिक असहमति दर्शायी।
- प्रश्न संख्या 29 में बालकों के मूल्य निर्माण में रंगमंच प्रभावी भूमिका निभाता है, के सम्बन्ध में पूर्व परीक्षण में 78.8% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में 90.9% छात्रों ने सहमति दर्शायी है। जबकि पूर्व परीक्षण में 15.1% तथा पश्च परीक्षण में मात्र 9.1% छात्र आंशिक सहमत थे। वही पूर्व परीक्षण में 6.06% तथा पश्च परीक्षण में कोई भी छात्र असहमत नहीं थे।

6.4 रंगमंच शिक्षण के प्रति जागरूकता (Awareness related to use theatre in Teaching)

	Agree (सहमत)		Partial Agree (आंशिक सहमत)		Disagree (असहमत)	
Q.No.	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test
5	63.6	90.9	30.3	9.09	6.06	-
8	21.3	9.09	51.5	45.5	24.2	45.5

9	33.3	45.5	24.2	54.5	42.4	-
11	15.2	-	15.2	9.09	69.7	90.9
12	9.1	21.3	21.3	33.3	69.7	45.5
15	12.1	9.1	12.1	21.3	75.8	69.7
18	3.03	-	3.03	-	93.9	100

- सारणी संख्या 6.4 के प्रश्न संख्या 11 में रंगमंच शिक्षण में बालक अपनी समस्याओं का समाधान आसानी से नहीं कर पाने के सम्बन्ध में पूर्व परीक्षण में 15.2% छात्रों ने अपनी सहमती तथा 15.2%छात्रों ने आंशिक सहमती बतायी तथा पश्च परीक्षण में किसी भी छात्र ने अपनी सहमति नहीं बतायी और69.7% छात्रों ने पूर्व परीक्षण में अपनी असहमति बतायी तथा पश्च परीक्षण में 90.9% छात्रों ने अपनी असहमति बतायी।
- प्रश्न संख्या 18में रंगमंच द्वारा शिक्षण केवल प्रतिभाशाली बालकों के लिए उपयोगी है के संबंध में पूर्व परीक्षण में 3.03% छात्रों ने अपनी सहमति बतायी तथा3.03% छात्रों ने ही अपनी आंशिक सहमति बतायी तथा किसी भी छात्र ने पश्च परीक्षण में अपनी सहमति तथा आंशिक सहमति नहीं बतायी जबकि 93.9%छात्रों ने पूर्व परीक्षण में अपनी असहमति बतायी तथा 100% छात्रों ने पश्च परीक्षण में अपनी असहमति बतायी।
- प्रश्न संख्या 15 के कथन के अनुसार कि रंगमंच को केवल एक शिक्षण विधि के ही रूप में लिया जाना चाहिए के सन्दर्भ में पूर्व परीक्षण में 12.1% छात्रों ने अपनी सहमति तथा आंशिक सहमति बतायी तथा पश्च परीक्षण में 9.1% छात्रों ने अपनी सहमति बतायी और 21.3% छात्रों ने अपनी आंशिक सहमति बतायी जबकि 75.8% छात्रों ने पूर्व परीक्षण में अपनी असहमति बतायी और पश्च परीक्षण में 69.7% छात्रों ने अपनी असहमति बतायी।

6.5रंगमंच का ज्ञान (Knowledge of Theatre) :-

Q.No.	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test	Pre. Test	Post Test
23	93.9	100	-	-	-	-	3.03	-	3.03	-
24	15.2	69.7	66.6	30.3	18.2	-	-	-	-	-
25	9.1	-	-	-	-	9.1	90.9	90.9	-	-
26	51.5	9.1	24.2	9.1	-	-	15.2	81.8	-	-
27	69.7	69.7	21.2	30.3	9.1	-	-	-	-	-

- सारणी संख्या 6.5 के कथन संख्या 23 के अनुसार पूर्व परीक्षण में 93.9% छात्रों ने यह माना कि मैं स्वयं की इच्छा से रंगमंच का प्रशिक्षण ले रहा हूं तथा 3.03% छात्रों ने मनोरंजन और 3.03% छात्रों ने रंगमंच प्रशिक्षण के लिए अन्य कारण माना है। पश्च परीक्षण में 100% छात्रों ने माना कि मैं शिक्षण में रंगमंच का प्रयोग करने के लिए साथी अध्यापकों को भी प्रेरित करूंगा।
- सारणी संख्या 6.5 के कथन संख्या 24 के अनुसार पूर्व परीक्षण में 15.2% छात्रों ने यह माना कि रंगमंच प्रशिक्षण का प्रयोग में अपने शिक्षण कार्य में करूंगा जबकि पश्च परीक्षण में 69.7% छात्रों ने माना कि रंगमंच प्रशिक्षण का प्रयोग मैं अपने शिक्षण कार्य में करूंगा। पूर्व परीक्षण में 66.6% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में 30.3% छात्रों ने माना कि रंगमंच का प्रशिक्षण अपनी रंगमंच दक्षता में कुशलता वृद्धि हेतु ले रहा हूं। पूर्व परीक्षण में 18.2% छात्रों ने रंगमंच प्रशिक्षण का अन्य कारण माना तथा पश्च परीक्षण में किसी भी छात्र ने अन्य कारण नहीं माना।
- कथन संख्या 25 के अनुसार पूर्व परीक्षण में 9.1% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में किसी भी छात्र ने नहीं माना कि रंगमंच द्वारा शिक्षण प्राथमिक स्तर के लिए उपयोगी है। पश्च परीक्षण में 9.1% छात्रों ने माना कि रंगमंच द्वारा शिक्षण विश्वविद्यालय स्तर पर उपयोगी है। पूर्व परीक्षण में 90.9% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में भी 90.9% छात्रों ने माना कि रंगमंच के द्वारा शिक्षण सभी स्तरों के लिए उपयोगी है।
- कथन संख्या 26 के पूर्व परीक्षण में 51.5% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में मात्र 9.1% छात्रों ने माना कि रंगमंच का विकास अनुकरण द्वारा हुआ है वहीं पूर्व परीक्षण 24.2% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में 9.1% छात्रों ने माना कि रंगमंच का विकास तमाशा द्वारा हुआ है। वहीं पूर्व परीक्षण में 15.2% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में 81.8% छात्रों ने माना कि रंगमंच का विकास शिकार के द्वारा हुआ है।
- कथन संख्या 27 के पूर्व परीक्षण में 69.7% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में भी 69.7% छात्रों ने रंगमंच को स्वयं सीखने के लिए प्रभावी बताया वहीं पूर्व परीक्षण में 21.2% छात्रों ने तथा पश्च परीक्षण में 30.3% छात्रों ने रंगमंच को दूसरों से सीखने के द्वारा प्रभावी बताया।

6.6 रंगमंच कार्यशाला प्रशिक्षण पूर्व तथा प्रशिक्षण पश्चात विधार्थियों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन :–

रंगमच कार्यशाला प्रशिक्षण पूर्व में विधार्थियों ने रंगमंच को अभिनय दक्षता, मनोरंजन के साथ ज्ञान अर्जित करने, शिक्षण प्रक्रिया के लिए प्रभावी बताया है। रंगमंच को एक मंच प्रदर्शन की संज्ञा दी। रंगमंच के द्वारा आत्मविश्वास, संवेग विकास, मनोरंजन, सृजनात्मकता, सर्वांगीण विकास को बढ़ावा दिया जाने वाला बताया है। रंगमंच के द्वारा सामाजिक मूल्यों को विकसित किया जा सकता है। वही रंगमंच कार्यशाला के पश्चात विद्यार्थियों ने रंगमंच को जीवन के दृष्टिकोण में सकारात्मक विचार जागृत करने वाला बताया। रंगमंच के द्वारा शिक्षा बिना बोझ के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। रंगमंच स्वयं को पहचानने दूसरों को समझने, सुनने, मूल्यों की समझ, समूह में सीखने, बालकों की प्रतिभाओं को निखारने में प्रभावी होता है। इस प्रकार कार्यशाला पूर्व एवं पश्चात के विचारों का अध्ययन करने से पता चलता है कि विद्यार्थियों में रंगमंच कार्यशाला के पश्चात रंगमंच के प्रति अधिक व्यापक दृष्टिकोण निर्मित हुआ है और वे रंगमंच को शिक्षण प्रक्रिया के लिए आवश्यक मानते है।

7. निष्कर्ष (Conclusion):–शोध निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि रंगमंच कार्यशाला प्रशिक्षण से पूर्व तथा पश्चात विधार्थियों के रंगमंच के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन आया जो सिद्ध करता है कि रंगमंच शिक्षण प्रक्रिया में प्रभावी भूमिका निभा सकता है। विद्यार्थियों में रंगमंच का कक्षा

कक्ष में प्रयोग को लेकर भी रंगमंच कार्यशाला पूर्व और पश्चात दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन आया। रंगमंच कार्यशाला प्रशिक्षण से पूर्व तथा प्रशिक्षण पश्चात रंगमंच और शिक्षण क्षमता, रंगमंच के द्वारा सामाजिक मूल्य विकास, रंगमंच शिक्षण के प्रति जागरूकता तथा कार्यशाला के सम्बन्ध में उनके विचार में सकारात्मक परिवर्तन आया जिससे सिद्ध होता है कि रंगमंच कार्यशाला प्रभावी रही। रंगमंच कार्यशाला से पूर्व विचारों कि अपेक्षा रंगमंच कार्यशाला के पश्चात विचारों में अधिकतर विधार्थी सहमत थे कि रंगमंच शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षण क्षमता, व्यक्तित्व विकास, सम्प्रेषण, सामाजिक मूल्य विकास, स्वयं को जानने, दूसरों को जानने व पहचानने, बालकों की प्रतिभाओं को निखारने में रंगमंच का प्रयोग प्रभावी रह सकता है।

8. सुझाव (Suggestions):– प्रस्तुत शोध के आधार निम्न सुझाव दिये जा सकते है –

(1) शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में रंगमंच के द्वारा शिक्षण को अनिवार्य रूप से जोड़ा जाना चाहिए।

(2) पाठ्यपुस्तकों का निर्माण भी रंगमंच पर आधारित होना चाहिए।

(3) सेवारत अध्यापको के लिए रंगमंच शिक्षण पर आधारित कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

(4) व्यक्तित्व विकास, सम्प्रेषण, मूल्य विकास के लिए शिक्षा रंगमंच से दी जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography) :–

1. राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (1.7)

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति की कार्यन्वयन योजना 1992

4. सिंह, अरूण कुमार (2008) 'मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध–विधियाँ', मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली–110009

5. Bharadwaj, Tilak Raj (1999) 'Education of Theatre' New Delhi, Mittal Publications

6. Gupta, L. (2003), Theatre Basis Education, New Delhi, Indian council of Philosophical Research.

7. M, Dr. Vanaja, Bharathi, D.V. (2008) 'Value - Oriental education, Hyderabad, Neelkamal Publication Pvt. Ltd.

8. Mohisin, S.M. (2010) "Experiments in psychology" Delhi, Motilal Banarsidas Publication 110009

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

''सहशिक्षा विद्यालय एवं बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं में पाये जाने वाले सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन ''

महेन्द्र कुमार तिवारी,

शोध सारांश

वर्तमान में विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए कई तरह के विद्यालय अपनी भूमिका निभा रहे है, इनमें निजी व शासकीय विद्यालय प्रमुख है। इन विद्यालयों में से अधिकांश विद्यालय सह शिक्षा पर आधरित है, तथा कई विद्यालय केवल बालिका विद्यालय है। यह ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्थित है। खण्डवा जिले के सहशिक्षा विद्यालय एवं बालिकाविद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। सहशिक्षा विद्यालय की बालिकाओं में, बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक मूल्य पाये गये। सांख्यिकी द्वष्टि से माध्य के आधार पर भीसहशिक्षा विद्यालय की बालिकाओं में अति उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये, जबकि बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं में उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये। अतः बालिका विद्यालयों को चाहिए कि वह अपनी बालिकाओं में अति उच्च सामाजिक मूल्यों के विकास में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वाहन करें।

प्रस्तावनाः–

शिक्षा के क्षेत्र में गुणोत्तर विकास के लिए विद्यालयों की स्थापना की गई है। शहरी व ग्रामीण छात्र – छात्राओं को अच्छी शिक्षा देना ही इन विद्यालयों का उद्वेश्य था।**शर्मा,पी., शर्मा,के.के.,गर्ग व गोस्वामी के अनुसार**–'' बच्चे लोकतंत्र के सभी मूल्य परिवार से ही सीखते है। शिक्षालय आने पर इन मूल्यों का विकास किया जाता है। इसलिए आधुनिक युग में शिक्षालय को केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन ही नहीं, प्रत्युत सामुदायिक जीवन की लघु इकाई माना गया है, जहाँ बच्चों को परिवार या घर के वातावरण जैसा ही सामजिक जीवन मिलता है,जिससे वे अपने साथियों या दूसरे बालकों से वे घुलमिल जाते हैं।''

हरजीत (1954), गुप्ता (1960), नमिता (1962) व कुलश्रेष्ठ (1975) ने अपने अध्ययन में पाया कि –" शिक्षक के अपने व्यक्तित्व, मूल्यों, मान्यताओं तथा व्यवहार का छात्रों के मूल्यों, व्यवहार, व्यक्तित्व आदि पर गहरा प्रभाव पड़ता है।" **पियाजे ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है**

एशोसिऐट प्रोफेसर गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय,बोरावां जिला खरगोन (म0प्र) deepakcharkhya11@gmail.com

कि–" लगभग 8 वर्ष का बालक अपने नैतिक मूल्यों का निर्माण और समाज के नैतिक नियमों में विश्वास करने लगता है।'' **पियाजे (1961) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि** "–11 से 12 वर्ष की आयु में सामाजिक मूल्यों का विकास हो जाता है। साथ ही बालकों के मूल्यों का विकास पारिवारिक,सांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण से प्रभावित होता है। **बर्जर, बी.एम. एवं किंच,जे.डब्ल्यू (1965) ने अपने अध्ययन में पाया कि**–"बालक की अभिव्यक्तियों एवं मूल्यों व व्यवहार से परिवार की अपेक्षा निज मण्डली अधिक प्रभाव डालती है।" **चौधरी, राधिका (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि** – ''फिरोजपुर शहर के कन्या एवं सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर है, जबकिइटारसी शहर के कन्या एवं सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर नहीं है।''**तिवारी ,महेन्द्र(2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि** – ''सरस्वती विद्या मंदिर में अध्ययनरत छात्रों में उच्च सामाजिक मूल्य, छात्राओं में अति उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये । जबकि विद्यार्थियों (छात्र+छात्रा) में उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये। छात्राओं में छात्रों से अधिक सामाजिक मूल्य पाये गये। **गनी एवं तिवारी (2014) ने अपने शोध कार्य में पाया**–'' खण्डवा जिले के उत्कृष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में उच्च सामाजिक मूल्य व छात्राओं में अति उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये । जबकि विद्यार्थियों (छात्र+छात्रा) में उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये। छात्राओं में छात्रों से अधिक सामाजिक मूल्य पाये गये।''**महास्के, विशाखा (2010) ने ''हायर सेकेण्ड्री स्कूल पर्सनल वेल्यू पेटर्नः ए स्टेडी'' विषय पर अपने शोध कार्य में पाया**–''विद्यार्थियों के मूल्यों में लिंग के आधार पर अन्तर पाया जाता है।''

शोध कार्य की आवश्यकता :– सहशिक्षा विद्यालय में बालक व बालिका एक साथ शिक्षा ग्रहण करते है, जबकि बालिका विद्यालय में केवल बालिकाएँ एक साथ शिक्षा ग्रहण करती है। ऐसे में आवश्यकता महसूस हूई कि शोध के माध्यम से यह पता लगाया जाये कि विपरीत लिंगी समूह व समान लिंगी समूह के सामाजिक मूल्यों में समानता है या भिन्नता। प्रस्तुत शोध कार्य इसी दिशा में किया गया एक छोटा सा प्रयास है।

शोध के उद्देश्यः– (1) खण्डवा जिले के सह शिक्षाबालिका विद्यालयों में अध्यनरत बालिकाओं में पाये जाने वाले सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना। (2 खण्डवा जिले के बालिका विद्यालयों में अध्यनरत बालिकाओं में पाये जाने वाले सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना। (3) खण्डवा जिले के सह शिक्षा बालिका विद्यालयों व असहशिक्षा बालिका विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में पाये जाने वाले सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँः–(1) खण्डवा जिले के सहशिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं में अति उच्च श्रेणी के सामाजिक मूल्य पाये जायेंगे। (2) खण्डवा जिले के बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत

बालिकाओंमें उच्च श्रेणी के सामाजिक मूल्य पाये जायेंगे। (3) खण्डवा जिले के सह शिक्षा बालिका विद्यालयों कीबालिकाओं में, असहशिक्षा बालिका विद्यालयों के बालिकाओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक मूल्य पाये जायेंगे।

शोध के न्यादर्श:– प्रस्तुत शोधकार्य में **''खण्डवा जिले''**के अर्न्तगत शहरी क्षेत्र से **3**सहशिक्षा विद्यालयों का व 03 बालिका विद्यालयों का तथा ग्रामीण क्षेत्र से 02सहशिक्षा विद्यालयों का व 02 बालिका विद्यालयों का चयन किया गया। इन**10**विद्यालयों मे से **04**हाईस्कूल व **06** हायर सेकेण्ड्री स्तर के विद्यालय थे। इन **10** विद्यालयों मे से 08 शासकीय व 02 अशासकीय विद्यालय थे।

शहरी क्षेत्र के सहशिक्षा विद्यालयों से **65**बालिकाओं का व ग्रामीण क्षेत्र के सहशिक्षा विद्यालयों से**38** बालिकाओं को इस प्रकार कुल **103** को बालिकाओं को सहशिक्षा विद्यालयों से चुना गया। तथा शहरी क्षेत्र केबालिका विद्यालयों से **60**बालिकाओं का व ग्रामीण क्षेत्र के बालिका विद्यालयों से **41** बालिकाओं को इस प्रकार कुल **101** बालिकाओं को असहशिक्षा(बालिका) विद्यालयों से चुना गया।

इस प्रकार कुल **204**बालिकाओं को शोधकार्य के लिये चुना गया। इस प्रकार कुल **430** बालिकाओं को शोधकार्य के लिये चुना गया।

शोध की विधि:–प्रस्तुत शोधकार्य **''सर्वेक्षण विधि''**पर आधारित था।

शोध में प्रयुक्त उपकरण:–न्यादर्श की राय जानने के लिये अनूपी समैया द्वारा निर्मित **''प्रमापीकृत सामाजिक मूल्य मापनी ''**का प्रयोग किया गया। इस मापनी में 60 कथन थे।

तथ्य संकलन:–सारणी कमांक:– 1

''सहशिक्षा विद्यालयों एवं बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का प्रतिदर्शन''

कमाक	प्रदत्त	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	सामाजिक मूल्य की श्रेणी
1	सहशिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाएँ	162	94.77	अति उच्च सामाजिक मूल्य
2	बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाएँ	268	86.94	उच्च सामाजिक मूल्य

सारणी कमांक:– 2

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

''सहशिक्षा विद्यालयों एवंबालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के सामाजिक मूल्यों की तुलना ''

क्रमांक	क्षेत्र	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य	परिणाम .01स्तर पर
1	सहशिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाएँ	162	94.77	11.67	6.03	सार्थक अन्तर है।
2	बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाएँ	268	86.94	15.04		

परिकल्पना की सत्यता का परीक्षणः—सारणी क्रमांक 1 के आधार पर प्राप्त मध्यमानों से सामाजिक मूल्यों की श्रेंणी का निर्धारण किया गया। इन परिणामों के आधार पर परिकल्पना 1 व 2 स्वीकृत होती है। सारणी क्रमांक 2 के आधार पर ज्ञात होता है, किसहशिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाएँके सामाजिक मूल्य परीक्षण के मापन से प्राप्त अंको का मध्यमान 94.77 तथा प्रामाणिक विचलन 11.67 प्राप्त हुआ तथा बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाएँके सामाजिक मूल्य परीक्षण के मापन से प्राप्त अंको का मध्यमान 86.94 तथा प्रामाणिक विचलन 15.04 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य टी मान 6. 03पाया गया, जो टी तालिका में 428 स्वतंत्रता के अंश पर स्तर .05 पर प्राप्त मान 1.96 व .01 स्तर पर प्राप्त मान 2.58 दोनों से अधिक है। इसलिए मध्यमानों का अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात दोनों समूहों के सामाजिक मूल्य समान नहीं है। दोनों समूहों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। इन परिणामों के आधार पर परिकल्पना 3स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष—(1) खण्डवा जिले केसहशिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओंमें अति उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये । (2) खण्डवा जिले के बालिकाविद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओंमें उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये। (3) खण्डवा जिले के सहशिक्षा विद्यालय एवं बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। सहशिक्षा विद्यालय की बालिकाओं में, बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक मूल्य पाये गये।

सुझावः— (1) बालिकाविद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओंमें अति उच्च सामाजिक मूल्य विकसित करने के लिये विद्यालयों में बालसभाओं , संस्कार कक्षाओं व शैक्षिक भ्रमण, का आयोजन किया जाये। इसके

लिए पाठ्योत्तर गतिविधियों को माध्यम बनाया जाये।(2) संम्पर्क कार्यक्रमों के दौरान शिक्षक के द्वारा अभिभावकों को भी इस बात के लिये प्रेरित किया जाय की वे अपने पाल्यों को मूल्यों की शिक्षा स्व आचरण ,स्व अनुशासन व अन्य माध्यमों से दे। शिक्षक स्वयं उच्च आदर्शों के द्वारा विद्याथियों मेंउच्च सामाजिक मूल्य विकसित करने का प्रयास करें। (3) अभिभावक अपने पाल्यों को अच्छे सामाजिक कार्यक्रम टी.वी. पर देखने के लिये प्रोत्साहित करें, साथ ही कार्यक्रम देखते समय मार्गदर्शन भी करें।(4) अभिभावकों को अपने पाल्यों में अति उच्च सामाजिक मूल्यों को विकसित करने के लिये विद्यालय की शिक्षा के साथ–साथ घर पर भी संस्कारों की व सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देना चाहिए। यह शिक्षा अभिभावक स्वयं आचरण से व स्व अनुशासित होकर दे तो अति उत्तम होगा।(5) अभिभावकों को अपने पाल्यों को ऐसी सामाजिक फिल्में, समाचार पत्र व अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे अच्छे संस्कारों व सामाजिक मूल्यों, नैतिक मूल्यों की शिक्षा मिल सकें। (6) सहशिक्षा विद्यालयों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में बालिकाविद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं को भाग लेने के अवसर प्रदान किये जाये। साथ हीबालिकाविद्यालयों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में सहशिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं को भाग लेने के अवसर प्रदान किये जाये।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ :–विपरीत लिंगी समूह व समान लिंगी समूह के सामाजिक मूल्यों में समानता है या भिन्नता। इसी सन्दर्भ में इस समस्या का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना आवश्यक हो गया है, ताकि इसका पता लगाया जा सके और यदि यह बात सही है तो सामाजिक मूल्यों को शिक्षा के माध्यम से किस प्रकार प्रतिस्थापित किया जाये इस हेतु सुझाव दिये जा सकें, जिससे की शिक्षकों, अभिभावकों तथा विद्यार्थियों में इसके प्रति जागरूकता लाई जा सकें। कोई भी शोध कार्य, भविष्य के लिए अन्य शोधार्थियों के लिए भी उपयोगी होता है । इसके साथ ही शिक्षा प्रशासकों,शिक्षक प्रशिक्षकों, प्राचार्यों, को दिशा–निर्देश का कार्य करता है। इस दृष्टि से भी शोध कार्य की उपयोगिता है।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

1. तिवारी, महेन्द्र (2013).''सरस्वती विद्या मंदिर के विद्यार्थियों में पाये जाने वाले सामाजिक मूल्यों का अध्ययन''.सामाजिक शोध योजना, 1(I-III), 25 –26.

2. गनी, असरार, तिवारी, महेन्द्र (2013).''उत्कृष्ट विद्यालयों के विद्यार्थियों में पाये जाने वाले सामाजिक मूल्यों का अध्ययन.'' रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंस, 8(XV-II), 267–269.

3. द्विवेदी, ए.एन. (2007). ''शासकीय एवं अशासकीय शिक्षामहाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा का अध्ययन''. इन सिंह, मयाशंकर, अध्यापक शिक्षाः गुणात्मक विकास . नई दिल्लीः अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड ड्रिस्ट्रीब्यूटर्स.पेज.40.

4. मेहरोत्रा, के.के., मिश्रा, पी.के. (2010). ''एम.एड. दिग्दर्शन''. (तृतीय संस्करण) .आगराः आर.एस.ए. इन्टरनेशनल.पेज.52.

5. सोलंकी, विरलकुमार (2007–2008), ''सामान्य जाति व जनजाति की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'', एम.एड., लघु प्रबंध. बोरावाँः गुलाबबाई स्मृति शिक्षा महाविद्यालय.पेज.30.

6. शर्मा, रेनूबाला, तिवारी,आभा एण्ड जैन, सुधा (2011). किशोर बालक–बालिकाओं में नैतिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन''. शोध समीक्षा और मूल्यांकन, 2 (13). पेज.162–162.

7. शर्मा, प्रभा, गोस्वामी, बुद्धिप्रकाश, गर्ग, ओ. पी. एण्ड शर्मा, के.के. (नवीन संस्करण). ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा''. जयपुरः स्वाति पब्लिकेशन्स.

8. महास्के, विशाखा (2010). ''हायर सेकेण्ड्री स्कूल पर्सनल वेल्यू पेटर्नः ए स्टेडी''. शोध संचयन 1 (1), 1–3.

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

साइबरनेटिक्स मे शैक्षिक शोध के अवसर

डॉ. संदीप सोनी[1] दीपमाला सोनी[2]

शोध सारांश

"तकनीकी" इस शब्द का उपयोग प्रायः विज्ञान जगत से ही सम्बंधित माना जाता रहा है किन्तु शिक्षा के क्षेत्र मे नवाचार के कारण अब इसका दायरा बढ़ चुका है। शिक्षा जगत मे अनेक शोध इन नवाचारों को जन्म दे रहे हैं। वर्तमान समय मे शिक्षा के क्षेत्र मे अनेक तकनीकों का उपयोग किया जाने लगा है जिसके परिणाम स्वरुप विद्यार्थी अपने अधिकाधिक ज्ञानेंद्रियों का उपयोग करते है जो उनके अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाती है।

डी. अन्विन के अनुसार "शैक्षिक तकनीकी का सम्बंध परीक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु अपनाई जाने वाली आधुनिक तकनीकों एवं कौशलों से है। इसके अंतर्गत अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं सहज बनाने हेतु विधियों एवं साधनों के उचित उपयोग एवं अधिगम परिस्थितियों के नियंत्रण की बात शामिल होती है।" शिक्षा तकनीकी का मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और उसके परिणामों मे सुधार लाना है। अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह अनुदेशनात्मक तकनीकी, अनुदेशनात्मक मनोविज्ञान और शिक्षण अधिगम मनोविज्ञान के क्षेत्र मे हो रहे अनुसंधान और नवाचारों का उपयोग करने का प्रयत्न करती है। इसी तरह की तकनीक एवं उपाय का उपयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को ठीक प्रकार नियंत्रित कर अच्छा अध्यापन एवं प्रभावशील अधिगम प्राप्त करने हेतु किया जाता है। इसी कड़ी का एक अंग सम्प्रेषण नियंत्रण विज्ञान भी है जो अनुदेशन के क्षेत्र मे होने वाले एक नवीन अनुसंधान एवं नवाचार का प्रतिनिधित्व करता है, और जिसका परिणाम अनुदेशनात्मक प्रक्रिया को नियंत्रित कर उसे प्रभावशाली बनाता है।

प्रस्तुत लेख के माध्यम से शैक्षिक तकनीकी के एक आधुनिक अंग साइबरनेटिक्स का अर्थ, परिभाषा, सिद्धांत, प्रक्रिया, अनुदेशनात्मक प्रणाली मे उपयोग तथा साइबरनेटिक्स का शिक्षा के क्षेत्र मे उपयोग एवं लाभ से अवगत कराया गया है जिसका उपयोग कर शिक्षक शैक्षिक शोध के माध्यम से शैक्षिक क्षेत्र की अनेक समस्याओं को हल करने मे कर सकता है तथा यह सम्प्रेषण को स्वचलित एवं स्वनियंत्रित युक्ति बनाने मे मदद करता है।

भूमिका :–

"तकनीकी" इस शब्द का उपयोग प्रायः विज्ञान जगत से ही सम्बंधित माना जाता रहा है किन्तु शिक्षा के क्षेत्र मे नवाचार के कारण अब इसका दायरा बढ़ चुका है। वर्तमान समय मे शिक्षा के क्षेत्र मे अनेक तकनीकों का उपयोग किया जाने लगा है जिसके परिणाम स्वरुप विद्यार्थी अपने अधिकाधिक ज्ञानेंद्रियों का उपयोग करते है जो उनके अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाती है। इस प्रकार से सीखा गया ज्ञान विद्यार्थी के मस्तिष्क पटल पर अधिक समय तक बना रहता है। साथ ही शिक्षक अपने अध्यापन को प्रभावी बनाने, नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग करने एवं जटिल संकल्पनाओं का रोचक एवं सरल प्रस्तुतीकरण करने में उपयोग करता है।

प्राचार्य, पारिजात महाविद्यालय, इंदौर, म.प्र., sandeepsoni2007@gmail.com
प्राचार्य, शिवा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, इंदौर, म.प्र.

अर्थ एवं परिभाषा :–

साइबरनेटिक्स को सम्प्रेषण नियंत्रण विज्ञान कहा जाता है। साइबरनेटिक्स शब्द का सर्वप्रथम उपयोग नौर्वेट बेनर ने 1948 मे किया था। साइबरनेटिक्स पद की उत्पत्ति एक ग्रीक शब्द कुबेरनेटिज (Kubernates) जिसका अ‍ॅग्रेजी मे अनुवाद स्टीअर्समैन (Steersmen) होता है इसका हिन्दी अर्थ नाविक या मल्हार है। नाविक या मल्हार का कार्य किसी जहाज या नौका को ठीक ढंग से ठीक दिशा मे ले जाने का होता है तथा इस कार्य को वह सफलतापूर्वक तब ही कर सकता है जबकि उसका जहाज या नाव प्रवाहित होने की प्रक्रिया पर पूर्ण नियंत्रण हो। जब उसे संकेत या पृष्ठपोषण (Feedback) प्राप्त हो कि नाव इधर उधर जा रही है वह सचेत होकर उस पर उचित नियंत्रण पाने का प्रयत्न करता है तथा उसे उचित मार्ग पर ले जाता है। इसी प्रकार शिक्षक की भूमिका भी एक नाविक की तरह होती है उसे भी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की वैतरणी से विद्यार्थी को इस पार से उस पार ले जाना होता है। जब छात्र उद्देश्यों की प्राप्ति के मार्ग पर चलते–चलते गंतव्य की ओर जाते हैं और यदि उन्हे परेशानी आती है तो शिक्षक अपनी अनुदेशन प्रणाली मे प्राप्त संकेत या प्रतिपोष से सचेत होकर छात्र की सही राह पर चलने मे मदद करता है जैसे शिक्षण विधियों मे परिवर्तन अधिगम अनुभवों मे सुधार या विद्यार्थियों से अंतर्क्रिया करने के ढंग मे सुधार आदि द्वारा शिक्षक अनुदेशन प्रणाली पर नियंत्रण स्थापित कर विद्यार्थी को सही दिशा एवं गति प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए। हमारा शरीर स्वचलित एवं स्वनियंत्रित एक अच्छी पृष्ठपोषित प्रणाली का उदाहरण प्रस्तुत करता है। भौतिक उपकरणों के रुप मे वाशिंग मशीन, हीटर, प्रेस, रेफ्रिजरेटर, रिकार्डर तथा प्लेयर आदि सभी जो स्वचलित होते हैं, इसी प्रकार की प्रणाली के उदाहरण हैं। साइबरनेटिक्स एक उन्नत तकनीकी के रुप मे पशु, मानव तथा मशीनों मे उपलब्ध इसी प्रकार की स्वचलित एवं स्वनियंत्रित प्रणालियों को विकसित करने हेतु काम मे लाई जाती है। शिक्षा के क्षेत्र मे साइबरनेटिक्स का सही उपयोग किस प्रकार हो, इस हेतु शैक्षिक शोधों की नितांत आवश्यकता हैं।

सम्प्रेषण नियंत्रण को पृष्ठ–पोषण मनोविज्ञान भी कहा जाता है। उसके अनुसार मानवीय विकास के लिए पृष्ठ–पोषण सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो गतिशील पृष्ठ–पोषण तथा स्व–नियमितीकरण या स्वचालन को लक्ष्य मानती है और इस बात पर बल देती है कि पृष्ठ–पोषण की समस्त विधियाँ तथा प्रविधियाँ छात्रों के व्यवहारों को नियंत्रित करके उनके व्यवहार मे अपेक्षित परिवर्तन लाती है।

डब्ल्यू. वेनर के अनुसार ''सम्प्रेषण नियंत्रण एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणियों व मशीनों मे नियंत्रण तथा सम्प्रेषण की व्यवस्था करता है।''

डॉ. सक्सेना तथा ओबरॉय के अनुसार ''सम्प्रेषण नियंत्रण छात्र को उसके अपने निजी व्यवहार के परिणाम उसके लिए पृष्ठ–पोषण का कार्य करते हुए उसके भावी व्यवहारों को नियंत्रित करते हैं। अतः मानव की प्रगति, उन्नति तथा विकास के लिए सम्प्रेषण नियंत्रण अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।''

"साइबरनेटिक्स को एक ऐसे सम्प्रेषण एवं नियंत्रण विज्ञान (Science of Communication and Control) की संज्ञा दी जा सकती है जिसका उद्देश्य ऐसी स्वचलित एवं स्वनियंत्रित प्रतिपोषित प्रणाली को विकसित करना होता है जैसे कि प्राकृतिक रुप से प्रायः पशु, मानव और स्वचलित मशीनी उपकरणों मे देखने को मिलती है।"

साइबरनेटिक्स की मान्यताएँ :–

डॉ. जे.पी.श्रीवास्तव के अनुसार साइबरनेटिक्स की मान्यताएँ इस प्रकार हैं :–

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

1. संवेदनाओं के द्वारा प्रतिक्रियाओं की दिशा स्वनिर्मित होती हैं। सामान्यतः विशिष्ट उद्दीपकों के साथ कोई विशिष्ट क्रिया सम्बद्ध होती है संतांत्रिकी सिद्धांत के अनुसार संवेदना या अदा का उद्गम प्राणी के बाहर ही नही होता अपितु उसके अंदर भी रहता है जिसके द्वारा उसके व्यवहार या प्रदा की दिशा निर्धारित होती है। कार्ल स्मिथ के अनुसार, व्यवहारी निकाय का स्वभाव ही ऐसा होता है कि निर्गत तथा ग्राह्य निवेश परस्पर समायोजित होते हैं।
2. लक्ष्य अथवा मानक तथा स्वचलित कार्यों का अंतर ज्ञात किया जा सकता है।
3. पृष्ठ–पोषण नियंत्रण के द्वारा प्रतिक्रियाओं को वांछित दिशा मे नियंत्रित किया जा सकता है।
4. गत्यात्मक पृष्ठ–पोषण प्रक्रिया के द्वारा ग्राह्य निकाय तथा बहु आयामीय प्रत्युत्तर मे समन्वय स्थामित किया जा सकता है।
5. नियंत्रण प्रतिक्रियाएँ प्रतिसम्भरण प्रतिक्रियाओं के द्वारा होती है और प्रतिसम्भरण प्रतिक्रियाएँ प्रायः ज्ञानेंद्रियों के विशिष्ट कार्य से सम्बंधित होती हैं अथवा विशिष्ट कार्य के रुप मे परिलक्षित होती हैं।
6. प्रणाली सिद्धांत इस बात को मान्यता प्रदान करता है कि अधिगम के प्रमुख निर्धारक व्यक्ति के आंतरिक संवेदीय संघटकों का समन्वय करने वाले हैं। बाह्य घटकों का अधिगम पर अपेक्षाकृत कम प्रभाव होता है।
7. व्यवहारवादी प्रणाली अनुसंधानों के अंतर्गत मानव व्यवहार के संवृत्त परिपथीय नियंत्रकों का अध्ययन किया जाता है।
8. अधिगम हेतु व्यवहार अव्यवस्थित न होकर चयनात्मक होता है।

सिद्धांत एवं प्रक्रिया (Theory and Mechanism) :–

साइबरनेटिक्स को सम्प्रेषण एवं नियंत्रण विज्ञान के रुप मे परिभाषित किया जाता है। शिक्षा एवं अनुदेशनात्मक प्रणाली को एक उचित स्वचलित एवं स्वनियंत्रित प्रणाली मे परिवर्तित करने के लिए इस विज्ञान की सहायता ली जा सकती है। साइबरनेटिक्स से सम्बंधित सिद्धांतों एवं प्रक्रिया की निम्न बिंदुओं के तहत चर्चा की जा रही है :–

1. किसी भी प्रणाली के मुख्यतः तीन भाग अथवा उपप्रणालियॉ होती हैं जिन्हे अदा (Input), प्रक्रिया (Process) तथा प्रदा (Output) के नाम से जाना जाता है। प्रणाली को प्रारंभ करने के लिए जिस प्रकार के मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है उसे अदा कहते हैं। प्रक्रिया उपप्रणाली, अदा को अपने वांछित रुप मे परिवर्तित करने का उत्तरदायित्व निभाती है तथा प्रदा उपप्रणाली, प्रक्रिया उपप्रणाली के द्वारा निभाए इस उत्तरदायित्व के परिणाम को सामने लाने का कार्य करती है।
2. प्रणालियों को सामान्यतः दो भागों मे विभक्त किया जा सकता है – मुक्त परिपथ प्रणाली (Open Loop System) एवं बंद परिपथ प्रणाली (Closed Loop System)। मुक्त परिपथ प्रणाली स्वयं सुधारात्मक तथा स्वचालित प्रणाली (Self Corrective Automatic System) नही होती क्योंकि इसमे अपनी कार्य प्रक्रिया तथा उसके परिणामों के बारे मे सम्प्रेषण करते रहने तथा आवश्यक पृष्ठपोषण प्रदान करने की क्षमता नही होती इस दृष्टि से साइबरनेटिक्स की गिनती एक बंद प्रणाली के रुप मे होती है।

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

साइबरनेटिक्स की बंद परिपथ प्रणाली (The Close Loop System of Cybernatics):-

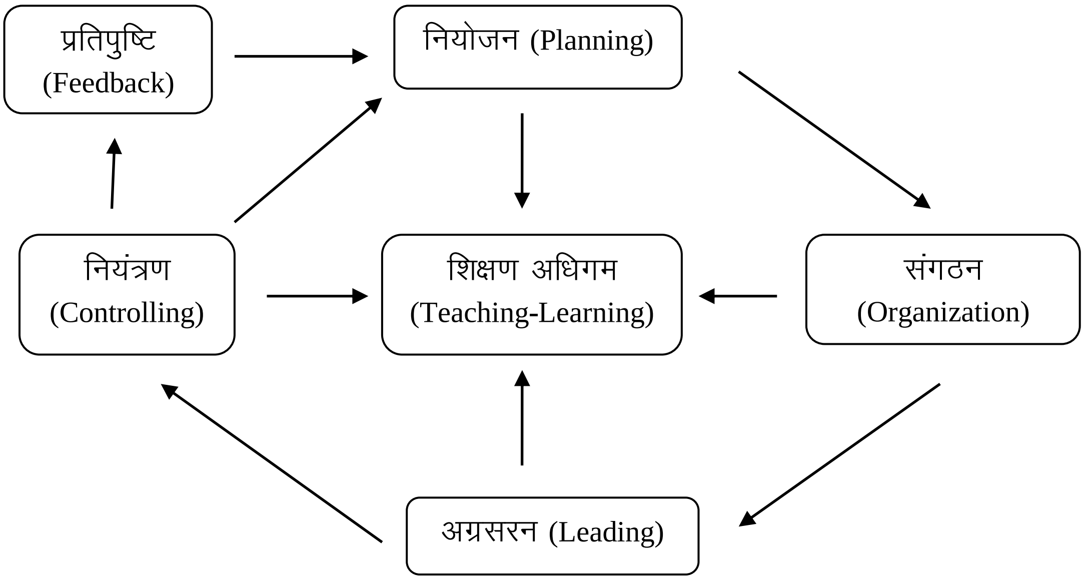

एक बंद परिपथ प्रणाली मे चित्रानुसार प्रणाली का परिणाम या उत्पादन प्रभावी ढंग से प्रणाली की अदा उपप्रणाली मे पुनः लौट आता है ताकि भविष्य मे परिणाम या उत्पादन पर नियंत्रण कर उसे पहले से अच्छा बनाया जा सके परिणामों के बारे मे प्रणाली को अवगत कराते रहना अच्छे सम्प्रेषण की निशानी है, इसी की माध्यम से प्रणाली को उचित पृष्ठपोषण मिलता रहता है।

इस सम्प्रेषण और पृष्ठपोषण के माध्यम से प्रणाली को स्वसुधार तथा स्वनियंत्रण के कार्यों मे इस प्रकार सहायता मिलती रहती है कि प्रणाली मे अपेक्षित सुधर कर उसे अधिक विकसित कर पाना सम्भव हो पाता है। इस प्रकार की प्रभावपूर्ण गतिशील एवं तत्काल पृष्ठपोषण एवं सम्प्रेषण जो केवल बंद परिपथ प्रणाली मे ही सम्भव है। किसी भी साइबरनेटिक्स प्रारुप का सबसे सशक्त पहलु माना जाता है।

अनुदेशनात्मक प्रणाली मे साइबरनेटिक्स का उपयोग (Use of Cybernetics in the Instructional Process) :–

साइबरनेटिक्स के सिद्धांत तथा कार्यप्रणाली हमारी अनुदेशात्मक प्रक्रिया तथा प्रणाली को एक स्वचलित, स्वनियंत्रित, स्वसुधारात्मक और स्वअनुदेशनात्मक प्रणाली बनाने मे उचित सहायता करते हैं। परम्परागत दृष्टि से सामान्यतः अनुदेशन मे एक प्रणाली के रुप मे तीन उपप्रणालियॉ अदा, प्रक्रिया तथा प्रदा शामिल किए जाते हैं।

परम्परागत अनुदेशन प्रणाली को एक साइबरनेटिक्स प्रणाली मे परिवर्तित करने की दिशा मे पृष्ठपोषण प्रक्रिया द्वारा आवश्यक भूमिका निभाई जा सकती है। इस प्रकार का स्वपृष्ठपोषण तब ही प्रदान किया जा सकता है जब प्रक्रिया उपप्रणाली के प्रयत्नों के फलस्वरुप प्रदा उपप्रणाली मे निहित शिक्षण अधिगम प्रणाली की जानकारी और उसके आधार पर मिलने वाले पृष्ठपोषण को पुनः अदा उपप्रणाली द्वारा उपयोग किया जा सके। इस जानकारी तथा पृष्ठपोषण के आधार पर यह तय किया जा सकता है कि अदा उपप्रणाली मे शामिल तत्वों की गुणवत्ता मे क्या कमी रह गई है अथवा प्रक्रिया

उपप्रणाली मे सब कुछ ठीक चल रहा है या नही इस जानकारी तथा पृष्ठपोषण के आधार पर सुधार लाने का कार्य प्रणाली मे यंत्रवत अपने आप ही चलना प्रारम्भ हो जाता है तथा धीरे–2 प्रणाली स्वचलित तथा स्वनियंत्रित प्रणाली का रुप धारण कर लेती है।

कारण स्पष्ट है कि जैसे ही प्रदा उपप्रणाली से प्राप्त जानकारी तथा पृष्ठपोषण, अदा उपप्रणाली मे वापस पहुँचता है तथा आवश्यक सुधार के साथ अदा तथा प्रक्रिया उपप्रणाली अपना कार्य और अच्छी तरह से प्रारंभ करती है, प्रदा उपप्रणाली मे परिणाम उतने ही अच्छे आने लगते हैं और जैसे ही अच्छे उन्नत परिणामों की जानकारी और पृष्ठपोषण अदा उपप्रणाली मे वापस आता है तो यह उचित अभिप्रेरणा तथा प्रोत्साहन का कार्य करता है जिसके परिणामस्वरुप प्रणाली को और अच्छा तथा और अधिक विकसित करने मे मदद मिलती है।

साइबरनेटिक्स का शिक्षा के क्षेत्र मे उपयोग एवं लाभ (Application and Advantages of Cybernetics in Education) :–

साइबरनेटिक्स विज्ञान के सिद्धांत एवं प्रक्रिया का शिक्षा के क्षेत्र मे अच्छी तरह उपयोग किया जा सकता है। इसके उपयोग से अर्जित लाभ इस प्रकार है :–

1. शिक्षण और अनुदेशन प्रक्रिया को साइबरनेटिक्स प्रणाली की सहायता से स्वचलित एवं स्वअनुदेशित बनाने का कार्य भलिभॉति सम्पन्न किया जा सकता है।
2. यह व्यवस्था शिक्षण प्रणाली को अधिक व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक बनाती है।
3. यह लीनियर अभिक्रमित के सिद्धांतों को स्पष्ट करती है।
4. यह शिक्षण का सार्वभौमिक रुप प्रस्तुत करती है।
5. शिक्षण प्रक्रिया का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत कर इसे उन्नतशील बनाने का प्रयास करती है।
6. शिक्षक को शिक्षण तंत्र समझने मे सहायता देती है।
7. इसके द्वारा अपेक्षित अधिगम व्यवहार की प्राप्ति सम्भव है।
8. नवीन शिक्षण प्रतिमानों को तैयार करने मे सहायता करती है।
9. कक्षा अनुदेशन मे उपयोगी है।
10. यह व्यवस्था स्वयं शिक्षण मे सहायता देती है।
11. किसी भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मे अभिप्रेरणा को उसक केंद्रीय तत्व माना जाता है। साइबरनेटिक प्रारुप के उपयोग से विद्यार्थियों को प्रेरित करने की समस्या स्वतः ही हल हो जाती है।
12. साइबरनेटिक सिद्धांतों के उपयोग से अनुदेशनात्मक प्रणाली पर उचित नियंत्रण स्थापित करने मे सहायता मिलती है।
13. साइबरनेटिक का उपयोग उपचारात्मक अनुदेशन कार्यो हेतु अच्छी तरह किया जा सकता है। साइबरनेटिक सम्प्रेषण तथा पृष्ठपोषण का विज्ञान होने के कारण यह निदान करने मे काफी समर्थ होता है जिससे कि अनुदेशन प्रणाली मे कोई कमी या खराबी किस रुप की है जानकर सही उपचारात्मक कदम उठाए जा सकते हैं।
14. एक स्वचलित पृष्ठपोषित प्रणाली के रुप मे साइबरनेटिक का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मे उपयोग शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनो को ही उनके कार्यो मे उचित सहायता प्रदान करने तथा उसके शिक्षण व अधिगम कला को निखारने मे उचित सहायता कर सकता है।
15. साइबरनेटिक, सम्प्रेषण और नियंत्रण के लिए प्रयुक्त अच्छी प्रणाली होने के नाते प्रशिक्षण तकनीकी के रुप मे भी उचित भूमिका निभा सकता है क्योंकि प्रशिक्षण प्रदान करने मे इन दोनो बातों की ही प्रमुख रुप से आवश्यकता होती है।
16. साइबरनेटिक अनुदेशन प्रणाली की सहायता से अनुदेशन के व्यक्तिकरण मे उचित लाभ प्राप्त हो सकता है।

17. सम्प्रेषण नियंत्रण सिद्धांत शिक्षक को निर्देशन देता है कि शिक्षण का प्रारुप तथा इसका नियोजन किस प्रकार से शीघ्र और सार्थक बनाया जा सकता है
18. यह निदानात्मक तथा उपचारात्मक शिक्षण मे उपयोगी है।

साइबरनेटिक के उपयोग मे सावधानियाँ :–

साइबरनेटिक का प्रयोग करते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए जो इस प्रकार हैं :–

1. शिक्षा के उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए। ये जितने अधिक स्पष्ट होंगे उतना ही शिक्षक अच्छे रुप मे उनका निवेष कर सकेगा।
2. इसके अनुसार शिक्षक को छात्रों की आवश्यकताओं तथा विशेषताओं के विषय मे पूर्ण ज्ञान होना चाहिए तब ही शिक्षक अपने शिक्षण मे अधिक सफल हो सकेंगें। इसका भी प्रयोग निवेष या अदा के रुप मे होता है।
3. पृष्ठ–पोषण इस व्यवस्था की जान है। पृष्ठ–पोषण जितनी देर मे शिक्षक के द्वारा दिया जाएगा उतनी ही कमी उत्पादन या निर्गतों के क्षेत्रों मे आऐगी। अतः उत्तम निर्गत के लिए या परीक्षा परीणामों को उत्तम बनाने के लिए पृष्ठ–पोषण तत्काल देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। पृष्ठ–पोषण मे गत्यात्मकता बनाए रखने के लिए शिक्षकों को विशेष प्रयास करने चाहिए।
4. शिक्षक को ध्यान मे रखना चाहिए कि पृष्ठ–पोषण व्यवस्था जितनी शीघ्रता, वैधता तथा विश्वसनीयता लिए होगी, शिक्षण प्रक्रिया मे निर्गत या प्रदा उतना ही उत्तम तथा प्रभावशील होगा।

वर्तमान समय मे सम्प्रेषण नियंत्रण पर आधारित अनेक शैक्षिक प्रणालियाँ प्रचलित हैं, जैसे– कैलर योजना, सेमीनार और स्व–व्याख्यान आदि। इस क्षेत्र मे शैक्षिक शोध कर अनेक नए रास्तों को खोजा जा सकता है तथा शैक्षिक नवाचार लाकर शिक्षा जगत से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

कुलश्रेष्ठ, एस.पी.: शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (2012)

मंगल, एस.के. तथा मंगल, यू. : शिक्षा तकनीकी, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2011.

सिंह, एम.एस.: शिक्षण तकनीकी एवं शिक्षा के नूतन आयाम, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2006.

शर्मा, आर.ए.: अनुदेशनात्मक एवं शिक्षण तकनीकी, आर लाल बुक डिपो, मेरठ, 2005.
शर्मा, आर.ए.: शिक्षा तकनीकी के आधार, आर लाल बुक डिपो, मेरठ, 2007.
शर्मा, आर.ए.: शिक्षण तकनीकी, आर लाल बुक डिपो, मेरठ, 2006.
श्रीवास्तव, एस.एस.: शिक्षा मे नवाचार एवं आधुनिक प्रवृत्तियॉ, हरप्रसाद भार्गव, आगरा, 1990.
वार्ष्णेय, ए.के. एवं भूषण : शैक्षिक तकनीकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

शर्मा, एस. एवं गुप्ता, एन. : शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबंध, श्याम प्रकाशन, जयपुर, 2009.

Barry, Clemson : Cybernetics: A New Management Tool, Tunbridge Wells, Kent, Abacus Press, 1984.

*****

NERI

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक वृद्धि एवं समायोजन के मध्य सह संबंध का अध्ययन

ओमकार प्रजापति[1] कमलेश प्रजापति[2] चन्द्रशेखर यादव[3]
सहायक प्राध्यापक
गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्याल बोरावां

शोध सारांश

आधुनिक समाज एवं बुद्धिजीवी है परन्तु उनमें संवेगों को समझने तथा अपने संवेगों की नियत्रित करने की क्षमता का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। वृद्धि के एक प्रकार में तो वह बहुत उच्च स्तर तक पहुच चुका है जैसे कोई वैज्ञानिक अपनी तकनिकी क्षमता के बल पर बहुत अच्छी मारक क्षमता का हथियार बनता है परन्तु उसका उपयोग समाज की विध्वंशात्मक गतिविधियों में करता है इससें स्पष्ट है कि उसमें संज्ञानात्मक विकास बहुत उच्च स्तर तक हो गया है परन्तु संवेगात्मक बुद्धि का विकास नहीं हो पाया है इस कारण वह अपने नकारात्मक संवेगो को नियंत्रित नहीं कर सका तथा अन्य लोगो के संवेगो को भी नहीं समझ सका। इस परिप्रेक्ष्य में ओसामा बिन लादेन का उदाहरण अत्यंत सटीक प्रतीत होता है। अतः हम कह सकते है कि समायोजन में संवेगात्मक बुद्धि के महत्व को समझता होगा तथा यह देखना होगा कि संवेगात्मक बुद्धि का का प्रभाव समायोजन पर किस प्रकार पडता है, तथा इन दोनों के मध्य क्या सहसंबंध है। इसके द्वारा अपने व्यक्त्वि के विकास से हम समाज में अपनी भूमिका का सही निर्वहन कर सकेगें तथा अपना जीवन सार्थक बना सकेगें ।

प्रस्तावना :—

मानव जीवन की एक क्रमिक विकास की कहानी है । मानव जीवन मे जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली है । प्रत्येक मनुष्य के अन्दर जन्मजात शक्तियॉ निहित होती है इन शक्तियों का प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है । निसन्देह शिक्षा ही मानव जीवन की योग्यताओं के अधिकतम विकास की सर्वाधिक सरल व्यवस्थित एवं प्रभावी विद्या है।

आधुनिक समाज तो बुद्धिजीवी तो बन गया है लैकिन संवेगों को समझने तथा नियंत्रित करने की क्षमता का अभाव दृष्टि गोचर हो रहा है।

संवेगात्मक बुद्धि के साथ साथ समायोजन को जानना भी नितांत आवश्यक है। इसके द्वारा हम अपने व्यक्तित्व के विकास से हम समाज मे अपनी भूमिका का सही निर्वहन कर सकेगें।

उददेश्यः—

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन ।

सहायक प्राध्यापक गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्याल बोरावां

परिकल्पनाः–

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना निम्न हैः–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर के बालकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

विधिः–

प्रस्तुत शोध में आकडों के संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत शोध मे न्यायदर्श हेतु उ.प्र के शाहजहापुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में से कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 60 विज्ञान तथा 60 कला वर्ग के विद्यार्थियों है।

शोध उपकरण के रूप मेंः–

1. संवेगात्मक बुद्धि मापन हेतु डॉ एस के मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी ।

2. समायोजन मापन हेतु डा. रामजी श्रीवास्तव एवं डॉ बीना श्रीवास्तव द्वारा निर्मित समायोजन प्रश्नावली ।

3. यह संबंध गुणांक हेतु कार्ल पियर्सन गुणन आपूर्ण विधि।

4.दोनो समूहों की तुलना हेतु मध्यमान एवं मानक चिचलन सांख्यिकी विधि।

प्रदत्तो का संकलनः–

प्रदत्तों के संकलन हेतु उ.प्र के शाहजहापुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत संपर्क कर आकडे सग्रहित किये ।

तालिका न.01

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के परिगणित मूल।

परिगणित मूल	संवेगात्मक बुद्धि (x)	समायोजन बुद्धि (y)
εx & εy	8045	40770
εx^2 & εy^2	551229	13969634
εxy	27757514	
N	120	
Y	0.646	
df	118	
सार्थक स्तर 5	0.174	
अन्तर	0.6467 > 0.174 सार्थक	
परिकल्पना	अस्वीकृत	

.

तालिका न.02

माध्यमिक स्तर के बालकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य परिगणित मूल।

परिगणित मूल	संवेगात्मक बुद्धि (x)	समायोजन बुद्धि (y)
εx & εy	3994	20233
εx^2 & εy^2	272786	6901539
εxy	1363145	
N	60	
Y	0.698	
df	58	
सार्थक स्तर 5	0.250	
अन्तर	0.698, 0.250 सार्थक	
परिकल्पना	अस्वीकृत	

निष्कर्ष एवं व्याख्या :–

उपरोक्त तालिका 01 को देखने से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों (बालक–बालिका) की संवेगात्तक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक की गणना की गई जिसमें Y मान 0.464 प्राप्त हुआ जो कि 118 स्वत्रन्तांश के लिए 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर तालिका मूल 0.174 से अधिक है अर्थात अन्तर सार्थक है अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

उपरोक्त तालिका 02 को देखने से ज्ञात होता है कि बालकों (बालक–बालिका) की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक की गणना की गई जिसमें Y मान 0.698 प्राप्त हुआ जो कि 58 स्वतन्तांश के लिए 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर तालिका मूल 0.250 से अधिक है अर्थात अन्तर सार्थक है अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों एवं बालको की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध है।

सुझाव

स्पष्ट है कि संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के बीच सार्थक सहसंबंध पाया गया इस प्रकार कहा जा सकता है कि व्यक्ति अपने कार्य में जीव क्षेत्र में अत्यधिक सफल हो सकता है तथा समयक तथा सुचारू जीवन यापन कर सकता है।

अगर प्रतिदर्श ओर बडे स्तर पर लिया जाए तथा विभिन्न संस्कृतियों के लोगों पर किया जाय तो परिणाम मे और भी पारदर्शिता आने की संभावना होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Arunmozhi A&K Dr. Rajendra Journal of Community Guidance and research march 2008, vol. 25 No.1
2. Best Johan W Research in education (1977) prentice hall of india private limited new delhi.

3. Golemen Daniel (1995) Emotional Intelligence Why if can matter move than New York : Bantam books
4. Mr. Dr. uma devi Edutracks aug 2009, vol 8 no 12
5. मंगल एस के शिक्षा मनोविज्ञान PHI Learning Pvt. ltd New Delhi.
6. गुप्ता डॉ एस पी सांखकीय विधियां शारद पुस्तक भवन।

वेबसाईट

http://www.eongnitiveintellligenece.com
http://www.ncte.com
http://www.shahjahanpur.nic.in

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 06 ISSUE – 6 JAN-JUN 2018

कला एवं संगीत शिक्षण का पाठयक्रम में स्थान

अंशिका पाठक[1] मनोजसिंह[2],

शोध सारांश

कला शिक्षा का उददेश्य मनुष्य एवं प्रकृति के बीच सुन्दर रिश्ता बनता है यह केवल सौंदर्य बोध मात्र नही है बल्कि बाहरी सौन्दर्य को आंतरिक सौदर्य से जोडकर सृजनात्मकता को पल्लवित करता है सृजनात्मक एवं सौंदर्य बौध प्रत्येक मनुष्य की जन्मजात विशिष्टता है व सौंदर्यानुभूति केप्रति रूचि जागृत करना शिक्षा का बुनियादी कार्य है

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार प्रथम दस वर्ष की सामान्य शिक्षा द्वारा बालकों को दस वर्ष की सामान्य शिक्षा द्वारा बालकों को सर्वागीण विकास करने का लक्ष्य है अतः बालक की सृजनात्मकता को अभिव्यक्ति के अवसर देने के लिए कला शिक्षा पाठयचर्या का अनिवार्य अंग होना चाहिये ।

प्रस्तावनाः—

कला एवं सगीत दोनो ही ऐसे विषय है जिन्हे प्रारंभिक स्तर से ही बालको के पाठयक्रम में स्थान दिया जाना अनिवार्य है। भाषा गणित विज्ञान एवं अन्य विषयों के कम की बात की जाए तो कला एवं संगीत के बाद ही भाषा एवं गणित का प्रारंभिक प्रशिक्षण तत्पश्चात विज्ञान और उसके बाद अन्य विषयों का कम आता है कला एवं संगीत केवल विषय ही नही है वरन भाषा से लेकर विज्ञान एवं दर्शन तक अनेक विषयों को समझने में सीखने में सहायक माध्यम की भूमिका भी निर्वाह करते है इसी कारण महत्व और भी बढ जाता है। कला एवं संगीत न केवल व्यक्तित्व का वरन व्यक्ति के अंदर सामाजिकता का विकास भी करते है। यह भी सर्वमान्य सत्य है कि बच्चे की प्रथम गुरू उसकी मां होती है जिसके द्वारा उसे रंगों की पहचान कराना पशु पक्षियों के स्वरों की पहचान करना और लोरी या भजन गाकर सुनाने या सुनवाने के द्वारा स्वर एवं संगीत के माधुर्य से परिचित कराना शामिल है। एक वर्ष से दो ढाई वर्ष तक की आयु का बच्चा हर बात को तेजी से सीखता है। इस स्तर पर बच्चे की रेखाएं वृत्त एवं त्रिकोण, चौकोन का ज्ञान मौखिक रूप से कराना चाहिये । बच्चे को गहरे रंग ही पंसद आते है उन्हे उनका उपयोग सीखना चाहियें।

ढाई उम्र के बाद बच्चा अत्यन्त तेजी से सीखने की उम्र में प्रवेश कर जाता है। निश्चय ही हर बच्चा दूसरे से भिन्न होता है लेकिन सृजनात्मकता तो हर बच्चे में होती है अपने चारो ओर जो वातावरण जो बच्चें को मिलता है उससे ही उसे सीखने की सामग्री प्राप्त होती है ।

चित्रों वाली किताबे इस क्षेत्र में सर्वाधिक सहयोगी सामग्री के रूप में प्रयोग की जाती है । 5 वर्ष की आयु के बाद संगीत प्रशिक्षण के पाठयक्रम में बच्चे को सामान्य बाद्ययंत्रों से परिचय कराना चाहिये । इससे एक और तो वे वाद्ययंत्रो से व्यवहारिक रूप से परिचय प्राप्त कर सकेगें। तो दूसरी और उनकी रूचि किस प्रकार के वाद्ययंत्रों में जागृत हो रही है यह भी स्पष्ट हो गया है।

5 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चे चित्रकला के क्षेत्र में रंगों के शेडस तैयार करना सीख सकते है अतः इस आयु वर्ग में यह पाठयक्रम शामिल होना चाहिये। कला एवं संगीत की साधना बालक को

सहायक प्राध्यापक (दृश्य कला)गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्याल बोरावां
सहायक प्राध्यापक (निष्पादनकला)गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्याल बोरावां

मानसिक संतुलन , बौद्धिक क्षमता एवं सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करती है । यह बालक का स्वस्थ विकास करती है अतः इसे जीविकोपार्जन का भी उत्तम माध्यम माना जाता है इसलिये कला एवं संगीत शिक्षण को पाठयक्रम में स्थान प्राप्त होना चाहियें ।

कला का अन्य विषयों से संबधं

कला मानव ह्दय की मूक अभिव्यक्ति है अर्थात मनुष्य जो बात शब्दों के द्वारा व्यक्त नही कर सकता है वह बात कला के माध्यम बता सकते है प्राचीन समय से ही कला का उनके विषयों से घनिष्ठ संबंध रहा है वर्तमान युग में कला का महत्व बहुत बढ गया है शिक्षक अपने विद्यार्थियों के सम्मुख अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने के लिये विविध विधियॉ अपनाता है परन्तु जब उसे यह लगता है कि उसकी बात छात्रो को पूर्व रूप से स्पष्ट नहीं है, तो वह भी कला की सहायता लेता है।

सह संबंध

कला और विज्ञानः–

विज्ञान की प्रत्येक वस्तु कलात्मक ढंग से बनी होती है उसको सुन्दर एवं आर्कषक बनाने के लिये कला विशेष रूप से सहायक सिद्ध है प्रत्येक चित्र को बनाने मे भी कला की सहायता ली जाती है क्योकि बिना चित्रों की सहायता से विज्ञान शिक्षा शुन्य के समान है ।

मनोविज्ञान

मनोविज्ञान के अंतर्गत मन की विभिन्न स्थितियों का अध्ययन किया जाता है । संगीत के रस की उत्पत्ति में क्रोध, शोक, भय, धृणा, उत्साह, अतभुत तथा रति आदि भाव किस प्रकार तथा किन उपकरणों से व्यक्त होते है आदि बातो का ज्ञान मनोविज्ञान से होता है मनोविज्ञान से कला अर्थात चित्र एवं चित्र कला का बेहद निकट का संबंध माना जाता है।
जीव विज्ञान

जीव विज्ञान के छात्रों की कला में विशेष रूचि होती है क्योंकि मेढक, जीव जन्तु , पेड पौधो , फूल पत्तियों आदि के चित्रकला की सहायता के बिना नही बनाये जा सकते। इसलिए जीव विज्ञान में भी कला का बहुत महत्व है ।

कला और इतिहास

कला और इतिहास में भी धनिष्ठ संबंध है। इतिहास हमें प्रत्येक काल की कला एवं उसकी विशेषताओं एवं क्रमिक परिवर्तनों का भी ज्ञान कराता है। इतिहास का यह अध्ययन एक ओर तो कलाकार को कला के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी देता है दुसरी ओर कलात्मक वस्तुओ का अध्ययन इतिहासकार को उस युग की सामाजिक सांस्कृतिक एवं अन्य स्थितियों का परिचय करता है।

कला ओर नागरिक शास्त्र

नागरिक शास्त्र कला का ज्ञान चित्रों की सहायता से छात्रो को पूर्ण रूप से दिया जा सकता है उदाहरणार्थ चुनाव विधि , संघ राज्यों आदि को चित्र की सहायता से सरलतापूर्वक समझाया जा सकता है।

कला और भूगोल ।

भौगोलिक वातावरण की भिन्नता इंसान के शरीर सौष्ठव, चेहरे की बनावट एवं रंग से भिन्नता लाती है यदि कलाकार को भौगोलिक स्थितियों का ज्ञान नही होता तो उसकी कला वास्तविकता के स्थान पर झुटी तस्वीर ही साबित होगी । प्रत्येक नगर या नदी आदि को हम छात्रों को वास्तव में नही दिखा सकते ऐसे समय में कला की सहायता ली जा सकती है ।

कला और भाषाः–

जिस समय मनुष्य कोई भाषा नही बोलता था, उसके पास कला ही एक सशक्त माध्यम था जिसके माध्यम से वह अपने भावों को प्रकट करता था । इस प्रकार कला ने ही भाषा को जन्म दिया है चित्रों की सहायता से छात्रों को कविता, कहानी, निबंध, आदि आसानी से पढाया जा सकता है।

कला और राजनीतिः–

राजनीतिक व्यवस्था साहित्य ,विज्ञान, संगीत तथा कला के उत्थान पतन का कारण होती है देश की सरकार कला एवं संगीत की प्रगति में रूचि लेती है । उस देश में कला एव संगीत का विकास अवश्य होता है